अनुक्रमणिका

- श्रद्धा रूपी गाय से भक्तिमार्ग का शुभारम्भ ३
- गौसेवा से गोविन्द प्रेम की संसिद्धि ४
- गौ-आराधन से महारास-दर्शन ६
- गौभक्त ही गोपालाराधक ८
- गौदान से गोलोक गमन १२
- गौसंरक्षणार्थ संतों का सतत् प्रयास १५
- भगवत्प्राप्ति में मूल 'गौभक्ति' १६
- धरा में धारण-शक्ति का आधार 'गौवंश' १८
- गौव्रतपरायण गोपाल जी २०
- गौ-पालन से प्रेमाभक्ति का परिपोषण २३
- गौ-सेवी संतों के उद्‌गार २६
- **Save Cow! Save Bharat!** २८
- राधे किशोरी दया करो ३२

गौ–भागवत विशेषांक

संरक्षक

श्री राधा मान बिहारी लाल

प्रकाशक

राधाकान्त शास्त्री

मान मन्दिर सेवा संस्थान

गह्वर वन, बरसाना, मथुरा (उ. प्र.)

Website : www.maanmandir.org

E-mail : ms@maanmandir.org

Tel. : 9927338666, 9927194000

मूल्य – १० रूपये

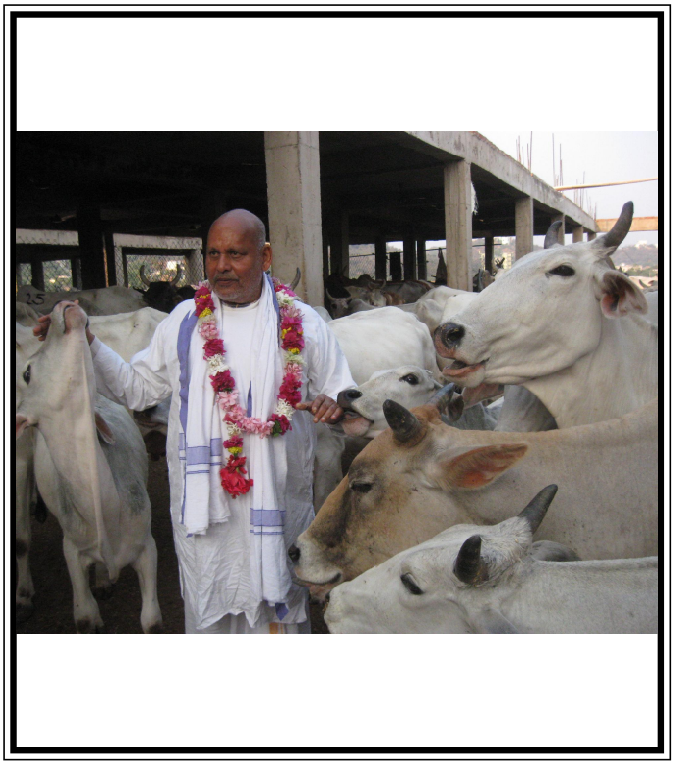

"जो गौ–भक्त नहीं है वो विनाश की ओर जा रहा है, निश्चित मरेगा और जो गौ–भक्त है वो अवश्य अमृतत्व को प्राप्त करेगा, केवल वह ही नहीं उसके पुरखे २१ पीढियाँ तर जाएँगी। गौ–सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती है।"

-पूज्य श्री बाबा महाराज

श्रीमानमन्दिर की बेवसाइट www. maanmandir. Org के द्वारा आप बाबाश्री के प्रात:कालीन सत्संग का ८.३० से ९.३० तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६.३० से ७.३० तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

प्रकाशकीय

भारतवर्ष की संस्कृति ऋषि,महर्षि एवं स्वयं भगवान् के आदर्शों का देदीप्यमान दर्पण है। यह राष्ट्र भगवान राम–कृष्ण की जन्मभूमि, क्रीड़ाभूमि रहा है। बस यही कारण है कि यहां की जीवनचर्या सूर्य, चंद्र ज्योत्सनावत परम मंगलकारक एवं लोक कल्याण की हेतु है। इस राष्ट्र में भी ब्रज वसुंधरा भगवान् श्री कृष्ण का निज धाम है। धाम भगवान् से भी बड़ा माना जाता है। जिस पाप का शमन भगवान् नहीं कर सकते उसका शमन केवल धाम करता है। धामनिष्ठ महापुरुष की कृपा हो जाती है तो धाम की भी कृपा सहज में मिल जाती है। पतित पावनी ब्रज अवनी की परम पवित्र स्थली गहवरवन में अखंड वास कर रहे ब्रज के विरक्त संत श्रद्धेय श्री रमेश बाबा दीर्घकाल से भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक रश्मियों से जगत के कल्याण में सतत् अनुरक्त हैं। उन्हीं महापुरुष की महती अनुकंपा से लोक कल्याण के अनेक कार्य यहां से किये जाते रहे हैं। जहां भगवान् के यज्ञ, महोत्सव नहीं होते वह स्थल रहने योग्य नहीं होता। इसी से बाबा महाराज नित्य निरंतर भगवदाराधन यज्ञ व महोत्सवों से अनुगृहीत करते रहते हैं। दिनांक **२६/११/२०१७ से ०२/१२/२०१७** तक गह्वर वन के आराधना स्थल रसमण्डप में गौ–भागवत महोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में ब्रज के अनेक संत व भागवताचार्यों का पदार्पण हुआ। ब्रज के प्रसिद्ध रासाचार्य कन्हैया स्वामी द्वारा रासलीला की गई। यही हमारी संस्कृति की पहचान है जो लोक–परलोक में सर्वत्र सदा सर्वदा मंगलकारिणी होती है। हमारे पाठकों को भी इसकी एक झलक मिल सके इस अवधारणा से यह अंक भी गौ– भागवत महोत्सव के नाम से प्रकाशित किया गया है। ब्रज की निःस्पृह साध्वी अंतरराष्ट्रीय भागवत विदुषी देवी मुरलिका की पीयूषवर्षिणी वाणी से गौ–भागवत कथा का श्रवण कर श्रोता मंत्रमुग्ध हुए।

–राधाकान्त शास्त्री
(व्यवस्थापक, मानमंदिर)

श्रद्धा रूपी गाय से भक्तिमार्ग का शुभारम्भ

(व्यासाचार्या श्रीमुरलिकाजी द्वारा कथित गौभागवत (२६/११/२०१७) से संग्रहीत)

नमो देव्यैः महादेव्यैः सुरभ्यैः च नमो नमः।
गवां बीजस्वरूपायैः नमस्ते जगदम्बिके।।
नमो राधा प्रियायै च पद्माशायै नमो नमः।
नमः कृष्ण प्रियायै च गवां मात्रै नमो नमः।।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभैभ्यैव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।

माहात्म्य श्रवण का एक ही उद्देश्य होता है उसके प्रति श्रद्धा को जगाना।

'श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई।'

श्रद्धा होना बहुत आवश्यक है और वह श्रद्धा क्या है ?

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई।
जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई।।

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड –११७)

गौ भक्ति ही सात्त्विकी श्रद्धा है। कोई भी सत्कार्य बिना श्रद्धा के सम्भव नहीं है। सात्त्विकी श्रद्धा गौ रूपिणी है। जब श्रद्धा परिपक्व होकर परा श्रद्धा (सात्त्विकी श्रद्धा) हो जाती है तो गौ रूप धारण कर लेती है, फिर गौ रूप धारण करके अनेकानेक साधन (जप, तप, व्रत, संयम–नियम आदि धार्मिक अनुष्ठान) रूपी तृणों को चरती है अर्थात् जितने भी धार्मिक साधन हैं, वे श्रद्धा रूपी गाय के ग्रास हैं।

जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह शुभ धर्म अचारा।।
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई।।

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड –११७)

सात्त्विकी श्रद्धा द्वारा जब सतत् साधन होगा तो सात्त्विकी श्रद्धा रूपी गाय से भाव रूपी बछड़े का जन्म होगा। भाव रूपी वत्स को जब सात्त्विक श्रद्धा रूपी गाय देखेगी तो परमधर्म (भागवत धर्म, भक्ति धर्म) रूपी दूध को देगी।

परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई।।

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड –११७)

परम धर्म (भक्ति धर्म) ही दूध है। जब सात्त्विकी श्रद्धा होगी और भाव रूपी वत्स का जन्म होगा तो सहज में ही भक्ति धर्म में निष्ठा हो जाएगी। फिर निष्कामता की अग्नि में उस दूध को औटाया जाए, इसे बहुत ही सुन्दर ढंग से गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीमानसजी में वर्णन किया है।

अतः भक्तिमार्ग में शुभारम्भ सात्त्विक श्रद्धा रूपी गाय से ही होता है। कहने का भाव है कि संसार के जितने भी धार्मिक अनुष्ठान हैं वे बिना श्रद्धा के, बिना गाय के सम्भव ही नहीं हैं। हमारे ग्रन्थों में लिखा है जब कोई भी याजक दीक्षित होता है तो उसे सबसे पहले पंचगव्य का पान कराया जाता है, पंचगव्य पीने के बाद ही उसे यज्ञ में दीक्षित होने का अधिकार मिलता है। इसलिए इस मार्ग में प्रवेश ही गौमाता, श्रद्धा रूपी गाय से होता है।

आध्यात्मिक शक्ति व संस्कृति का आधार– 'गौमाता'

वर्तमान समय में जो दुर्दशा गौवंश की है, वह किसी से छिपी नहीं है। यहाँ तक कि 'गौ माहात्म्य' कहने–सुनने के बाद भी उसके प्रति श्रद्धा नहीं जगती है, उसका कारण है कि अंतःकरण इतना पवित्र नहीं है, इतनी सामर्थ्य नहीं है कि उसको ठीक–ठीक रूप से हम लोग समझ सकें और क्रियात्मक रूप देकर गौ–सेवा कर सकें।

धर्म क्या है ? वाल्मीकि रामायण में पर्वत श्रेष्ठ मैनाक ने हनुमान जी महाराज को बहुत सुन्दर एक पंक्ति में सनातन धर्म की परिभाषा कही है–

कृते च प्रति कर्त्तव्यं सर्वधर्मः सनातनः।

"संसार में यदि किसी भी जीव ने आपके प्रति थोड़ा भी उपकार किया है, तो उसके प्रति कृतज्ञता की भावना होना ही सनातन धर्म है।" यदि देखा जाए तो संसार में गाय जैसा उपकार करने वाला कोई नहीं है, जिसकी स्वाँस प्रति स्वाँस भी केवल उपकार के लिए है।

हमारे भारतवर्ष में जितनी उपजाऊ भूमि है, उसमें प्रतिवर्ष ११४० करोड़ कुन्तल अनाज पैदा होता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष अकेला दो बार पूरे विश्व को खिला दे तो भी अन्न बच जायेगा, इतनी अधिक यह उपजाऊ भूमि है, तभी तो सोने की चिड़िया कहा है, इतना स्वर्ण उगलता था यह देश लेकिन जब से गौमाता की उपेक्षा हुई, जबसे गौवंश पर अत्याचार हुआ, तब से ये सारा भारत एकदम शक्तिहीन हो गया। एक लेख में लिखा था कि भारतवर्ष में जितने भी बाहरी शासक आये, उनमें जब ब्रिटिशकाल आया तो ब्रिटेन का एक राज्यपाल था रोबर्ट क्लाइव, उसने स्वयं लिखा कि भारतवर्ष को यदि नष्ट करना है तो यहाँ की दो चीजों को नष्ट कर दो– एक तो भारत की गुरुकुल प्रणाली और दूसरी

यहाँ की कृषि व्यवस्था। भारत की कृषि व्यवस्था पूर्णरूपेण गाय पर आधारित है, इसलिए यदि भारत को नष्ट करना है, भारत को विदीर्ण करना है तो भारत में से गायों को समाप्त कर दो। कितनी बड़ी विस्तृत खोज की उसने! इस प्रयोजन सिद्धि के लिए उस ब्रिटिश शासक ने हमारे भारतवर्ष में न जाने क्या–क्या किया, न जाने कितने कसाई खाने खुलवा दिए। १७ वीं शताब्दी में सबसे पहला कसाई खाना खुला था भारतवर्ष में और उस कसाई खाने में एक दिन में तीस हजार गायें मारी जाती थीं और इस तरह से उन लोगों ने एक वर्ष में हमारे एक करोड़ गौ वंश को समाप्त कर दिया और उस ब्रिटिश राज्यपाल ने स्वयं खोज करके कहा कि अरे भाई! बंगाल में तो इतना अधिक गौवंश है कि उतने मनुष्य भी नहीं हैं। पहले भारतवर्ष में लोगों की जनसंख्या कम थी और गौवंश ज्यादा था। वर्तमान में आज लोग इतने अधिक हैं और गौवंश तो कुछ गिना–चुना ही रह गया, अगर ऐसी ही उपेक्षा होती रही तो ये भी कुछ दिन बाद दिखाई नहीं देगा। भारत स्वतंत्र होने से पहले गांधी जी ने कहा था कि जिस दिन भारत स्वतंत्र होगा, हम उसी दिन सबसे पहला यही कार्य करेंगे कि जितने भी गायों के कत्लखाने हैं सब बंद करायेंगे। नेहरूजी ने भी यही कहा था कि जैसे ही भारत स्वतंत्र हुआ और यदि मैं प्रधानमंत्री बन गया तो मैं ऐसा ही करूँगा। लेकिन देखो, भारत स्वतंत्र होने से पहले साढ़े तीन सौ कसाईखाने थे और जैसे ही स्वतंत्रता मिली, स्वतंत्रता मिलने के बाद वे कसाईखाने बंद होने के बजाय बढ़कर के छत्तीस हजार हो गए और वर्तमान में कसाईखानों की संख्या तो परिगणन में है ही नहीं, बढ़ती ही जा रही है और आज भी कसाईखानों में दस–दस हजार गायों का एक साथ कत्ल होता है, जरा सोचो ऐसी स्थिति में कहीं गौवंश देखने को भी रह जायेगा ? यदि ऐसी ही स्थिति बनी रही तो गौमाता कहीं दर्शन के लिए भी नहीं मिलेगी कुछ सालों में। 'गौमाता' ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि मैं अपने दूध से जिसको पोषित कर रही हूँ जब मैं वृद्ध हो जाऊंगी तो यही मेरे गले पर छुरी चलवाएंगे। हमलोग तुच्छ पैसों के लोभ में आकर गायों को बेच देते हैं। जब गौमाता वृद्ध हो जाती है, दूध नहीं दे पाती है, उस समय हमें उनकी सेवा करनी चाहिए लेकिन सेवा करने के बजाय हम लोग उनको कसाईखाने में भेज देते हैं, क्या यही एक पुत्र का कर्तव्य है अपनी माता के प्रति?

गौ–सेवा से गोविन्द–प्रेम की संसिद्धि

कृष्णावतार का मुख्य उद्देश्य है– 'गौ सेवा रूप परमधर्म की स्थापना।' गोलोक से गोकुल में आये, गोपाल बने, गोविन्द बने क्यों ? बस, इन्हीं लीलाओं को लोग सुनें– जन्म लीला से लेकर सम्पूर्ण कृष्ण चरित्र। कारागार में जन्म लिया तो वसुदेवजी ने दस हजार पयस्विनी गायों के दान का संकल्प किया। गोकुल आते–आते नंदबाबा ने तो २० लाख गायों का दान कर दिया, फिर शकटासुर आया, पूतना आयी, अघासुर, बकासुर आदि दैत्य आते तो उनकी मृत्यु के पश्चात् नंदबाबा ब्राह्मणों को गाय का दान करते थे। वत्सचारण, गौचारण, गौदोहन लीला, पंकाभिषेक लीला, चलन–सिखवन लीला, माखन–चोरी आदि जितनी भी लीलायें हैं, वे सब गौमाता से हुई हैं। द्वारिका में भी जब द्वारिकाधीश बन गये तो द्वारिकानाथ प्रतिदिन तेरह हजार चौरासी गायों का ब्राह्मणों को दान किया करते थे, उस समय भारत गौवंश से कितना समृद्ध था, कितनी समृद्ध थी यह भूमि। सम्पूर्ण गौचारण लीला का दर्शन गोपियाँ अपने घरों में बैठकर कर लेती थीं। एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है–

मणिधरः क्वचिदागणयन् गा मालया
दयितगन्धतुलस्याः। (भागवत १०–३५–१८)

अरी सखी! देख तो सही, हमारा गोपाल कितना गौभक्त है, लाखों गायें जहाँ चल रही हैं, वहाँ एक–एक गाय की गिनती करता है वह– कपिला आयी कि नहीं, नर्मदा आयी कि नहीं, सरस्वती आयी कि नहीं, सबला आयी कि नहीं। गिनती कैसे करता है ? यशोदा मैया ने गोपाल को जो मणियों की माला पहना रखी है, उस एक–एक मणि से गायों की गिनती करते हैं। ऐसे गौभक्त हैं कि आगे–आगे गाएँ चलती हैं और उनके पीछे–पीछे सेवक की भांति गोविन्द चलते हैं । ऐसा क्यों ? गौमाता मन में विचार करती हैं कि अगर हम गोपालजी के पीछे चलेंगी तो हमें उनके पृष्ठदेश का दर्शन होगा तब सम्मुख दर्शन करने का लाभ कैसे प्राप्त हो, इसलिए गैया–मैया आगे चलती हैं। आगे चलेंगी तो दर्शन लाभ कैसे होगा ? इसके लिए गोपालजी गायों को पीछे से सहलाते हैं। जब गायों को उनका कोमल–सुखद स्पर्श प्राप्त होता है तो गायें मुड़–मुड़कर गोपालजी को देख लेती हैं और जब मुड़कर देखती हैं तो गोपाल से नेत्र–मिलन होता है। इससे गायों की मार्ग की थकावट दूर हो जाती है, कृष्ण–दर्शन कर वे कृतकृत्य हो जाती हैं। गोपियाँ कहती हैं कि लालजी को गौ–रज प्रिय है, जब तक गौरज न मिले,

उत्सवं श्रमरुचापि दृशीनामुन्नयन् खुररजश्छुरितस्त्रक्।

(श्रीमद्भागवत १०/३५/२३)

युगलगीत में वर्णन है कि गायें आगे–आगे चल रही हैं, उनके चरणों से जो धूल उड़ रही है, उस गौधूलि से गोपालजी का सारा श्रीअंग प्रतिदिन स्नान करता है, यहाँ तक कि उनके नेत्र की पलक और भ्रकुटी भी गौरज से सन जाती है। गौरोचन का तिलक है, सर्वांग में गौरज लिपटी हुई है। ऐसी गौभक्ति, ऐसी गौसेवा, ऐसा गाय के प्रति भाव, ये आदर्श स्थापित करने के लिए कृष्णावतार हुआ है, गौसेवा रूपी परमधर्म की स्थापना के लिए। श्यामसुंदर की वनमाला गौरज में सन गयी है, सम्पूर्ण श्रीअंग गौरज में सन गया है। उस स्वरूप को देखने के लिए गोपियाँ आतुर हैं। कभी–कभी आने में विलम्ब हो जाता है तो गोपियाँ परस्पर में कहती हैं– ऐसा लगता है–

वत्सलो व्रजगवां गदगध्रो वन्द्यमानचरणः पथि वृद्धैः।

(श्रीमद्भागवत १०/३५/२२)

बड़े–बड़े देवताओं द्वारा पूजित हैं कन्हैया के चरण और हमारा कैसा सौभाग्य है कि गौधूलि बेला में, गौरज से सने हुए गोपाल का साक्षात्कार हमें नित्य ही करने को मिल जाता है। इन्हीं चर्चाओं में गोपियाँ तन्मय हो जाती हैं, तब तक श्यामसुंदर के आने का समय हो जाता है। आगे–आगे गायें हैं, उनके पीछे कृष्ण–बलराम आ रहे हैं।

एक बार कंस से प्रेरित होकर अरिष्टासुर नाम का एक दैत्य विशाल साँड़ का रूप धरकर ब्रज में आया, उसे देखकर सभी गायें और बछड़े अपने बन्धन तोड़कर भागने लगे तब श्यामसुंदर ने उसकी दोनों सींगें पकड़कर समाप्त कर दिया। अरिष्टासुर के वध से ब्रजवासी भय से तो मुक्त हो गये लेकिन देखो– ब्रजवासियों की गौ–निष्ठा, श्रीराधारानी की सखियों ने श्यामसुंदर का बहिष्कार कर दिया। वे बोलीं– 'कन्हैया', तुमने गौवंश की हत्या की है, आज से हम तुम्हारा स्पर्श नहीं करेंगी, अब तुम छूने योग्य भी नहीं रह गये हो। श्यामसुंदर बोले – हे ब्रजदेवियो! यह तो असुर है, यह तो केवल गौवंश का रूप धारणकर आया था, इसको मारने से कैसा दोष है? गोपियाँ बोलीं– चाहे भले ही असुर था, लेकिन उसका रूप तो गौवंश का ही था, अतः तुम्हें उसे मारने का कोई औचित्य, कोई अधिकार नहीं था। अतः हम तुम्हारा बहिष्कार करती हैं। ठाकुरजी बोले– हे ब्रजदेवियो ! बहिष्कार तो मत करो, ऐसा कोई प्रायश्चित बताओ, जिससे मेरी शुद्धि हो जाये। गोपियाँ बोलीं– तुम्हें क्या प्रायश्चित बतायें, कोई साधन–भजन करते तो हमने तुम्हें देखा नहीं, किसी तीर्थ में आते–जाते देखा नहीं, किसी देवमंदिर में वंदन–प्रणाम करते तो तुम्हें देखा नहीं, तुम क्या प्रायश्चित कर्म करोगे ? केवल काले काम दिन–रात किया करते हो। माखन चोरी करना, दान लेना, ये सब काले काम करते–करते तुम काले हो गये हो। अष्टछाप के कवियों में कृष्णदासजी ने अपनी वाणी में बहुत सुन्दर ढंग से गोपालजी की गौभक्ति को व्यक्त किया है। गोपियाँ श्यामसुंदर से कह रही हैं–

''लाला याही ते कारे भये तुम कर–कर ऐसो काम, तुम कैसे छुटोगे पाप ते काहु तीरथ हू नहीं जात''

ये काले काम कर–करके ही तुम काले हो गये हो, किसी तीर्थ में तुम जाते नहीं हो तो इस पाप से कैसे छूटोगे। छोड़ो हमारा रास्ता, दान लेने आ जाते हो, रोज–रोज किस बात का तुम्हें दान दें। श्यामसुंदर बोले– नहीं, दान लिए बिना तो तुम्हें जाने नहीं दूँगा। हे गोपियों, हमारे जैसा भक्त कौन होगा? गोपियाँ हँस गयीं– अरे ! तुम भक्तराज बनते हो, कभी तो तुम्हें भजन करते हमने देखा नहीं, तुम कैसे भगत हो ? श्यामसुंदर बोले– अच्छा, हमारी भक्ति सुन लो–

''प्यारी गौरज गंगा नहात हों, जपत गऊअन को नाम।''

गैया की रज से बड़ा कोई तीर्थ है क्या? ऐसा कौन–सा तीर्थ है जो गाय की रज में नहीं है? गाय के चरणों में नहीं है ?

''सर्वे देवा गवां अंगे तीर्थानि तत्पदेषु च।''

गौमाता सर्वदेवमयी है, सर्वतीर्थमयी है, इसलिए मेरे जैसा भजनानंदी कौन होगा ? दिन भर गौओं के नाम की माला जपता हूँ। अपनी मणिमाला से गायों की गिनती करता रहता हूँ, दिन भर गायों के नाम लेता रहता हूँ, इससे बड़ा भजन और क्या हो सकता है ? इसलिए **हे स्वामिनीजू!** वृषभानु लड़ैती दान दैं, हम परम पुनीत सदा रहें, नहिं दान लेत सकुचायँ। मुझे दान लेने में इसलिए संकोच नहीं है क्योंकि मैं सदा पवित्र हूँ, मैं प्रतिदिन गौओं के नाम की माला जपता हूँ, प्रतिदिन गौरज तीर्थ में स्नान करता हूँ इसलिए मुझे दान लेने में कोई संकोच नहीं है। मैं नहीं मानता कि मैं अपराधी हूँ, दोषी हूँ । मेरे जैसा पवित्र कोई नहीं हो सकता और गौरज में स्नान करने वाला गौरज में तिलक करने वाला गायों का नाम जपने वाला, ऐसे गौभक्त के लिए संसार में अलग से किसी पाप का प्रायश्चित करने की जरूरत नहीं रह जाती। गाय को सर्वपूज्य भाव कैसे मिला, इस विषय में बड़ा सुन्दर प्रसंग है–

इक्ष्वाकुवंश में एक राजा हुए हैं **'सौदास'**, एकबार महर्षि वशिष्ठ से इन्होंने प्रार्थना की और जिज्ञासा की– महाराज!

त्रिलोकी में सबसे पवित्र और श्रेष्ठ वस्तु क्या है ? वशिष्ठजी ने वहाँ सौदास को गौ–माहात्म्य सुनाया और कहा– राजन्! संसार में सर्वश्रेष्ठ, सबसे पवित्र वस्तु एक ही है, जिसके दर्शन–सेवा ही नहीं, स्मरणमात्र से ही अन्तःकरण पवित्र हो जाता है। जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल और रात्रि में सोने से पूर्व गायों के नाम का उच्चारण कर लेता है, गाय का स्मरण कर लेता है, उसके सभी पापों की निवृत्ति गाय के केवल स्मरणमात्र से हो जाती है, बल और पुष्टि की प्राप्ति होती है। अगर किसी को बुरे स्वप्न आते हों तो उस स्वप्न का जो दोष होता है, वह केवल गाय को प्रणाम करने मात्र से दूर हो जाता है। इतनी पवित्रता, इतनी सामर्थ्य गौवंश को कैसे मिली, यह प्रसंग तो देवराज इन्द्र को ब्रह्माजी ने सुनाया था। इन्द्र ने ब्रह्माजी से पूछा– गाय को इतना सर्वपूज्यत्व कैसे मिला कि देवता भी पवित्र होते हैं गाय से, मनुष्य भी पवित्र होते हैं। गाय से श्रीठाकुरजी भी अपने आपको पवित्र मानते हैं, इतनी पूज्यता गाय को कैसे मिल गयी ?

ब्रह्माजी ने कहा – देवराज ! आप और हमलोग गाय की वह महिमा नहीं समझ सकते जैसी महिमा गाय की है। एकबार जब दैत्यों द्वारा देवताओं का पराभव हुआ, देवता स्वर्ग से भगा दिये गये तो देवताओं की माँ अदिति को बहुत शोक हुआ। अदिति माता ने कैलाश पर्वत पर जाकर अपने पुत्रों के उत्कर्ष के उद्देश्य से ग्यारह वर्षों तक एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या की। अदिति माता के साथ–साथ वहाँ सुरभि गाय ने भी तपस्या की। अतः दोनों के अद्भुत तपोबल से भगवान् प्रसन्न हुए और प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिये। उन्होंने अदिति माता और सुरभि माता दोनों से कहा– आप दोनों अपने इच्छित वरदान मुझसे माँग लें, जो आपको चाहिए मुझसे माँग लें। अदिति माता ने कहा – हे प्रभु ! मेरे पुत्रों को स्वर्ग से भगा दिया गया है। अब ऐसी कृपा आप करें कि देवताओं को फिर से स्वर्ग मिल जाये।

भगवान् ने कहा– ठीक है, आपकी इच्छा पूरी होगी। आपकी इच्छा पूर्ति हेतु मैं स्वयं अवतार लेकर आऊँगा। फिर ठाकुरजी ने सुरभि गौमाता से पूछा– हे गौमाता ! आपको क्या चाहिए, आपने किस इच्छा से तपस्या की है ? सुरभि माता बोलीं– हे प्रभु! मैंने निष्काम भाव से केवल आपके प्रति प्रेम प्राप्त करने के उद्देश्य से तपस्या की है। आपसे कुछ इच्छा नहीं है। निष्काम भजन में इतनी सामर्थ्य है कि भगवान् सुरभि गाय पर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने कहा– हे शुभानने! आपने बिना लोभ के, बिना कामना के, मेरी तपस्या की है, भजन किया है तो मैं आपको यह वरदान देता हूँ कि सारी त्रिलोकी की अधीश्वरी, अधिष्ठात्री देवी के रूप में आपको देखा व पूजा जायेगा, आपके नाम से मेरे लोक का भी नाम गौलोक होगा और आपके नाम से ही मेरी पहिचान भी गोविन्द व गोपाल के रूप में होगी। आपने निष्काम भाव से पूजा की है तो संसार में जो पूज्यता आपको मिलेगी, वह मुझे भी नहीं मिलेगी, मुझसे अधिक पूज्यता आपको मिलेगी। आपने निष्काम भाव से भजन किया है इसलिए आपको तीनों लोकों की अधीश्वरी व अधिष्ठात्री के रूप में देखा जायेगा और जिसका आपके प्रति भाव नहीं होगा, वह हजार भजन–साधन करने के बाद भी मुझको प्रसन्न नहीं कर पायेगा। जिसको एक जन्म में मेरी प्राप्ति की इच्छा है, उसे तन–मन–धन से आपकी सेवा में जुट जाना चाहिए। (यह भगवान् ने पद्मपुराण में कहा है) यह मेरी प्रतिज्ञा है, मेरा प्रण है। जो गौसेवा करता है, उसको एक जन्म में निश्चित ही मेरी प्राप्ति हो जाएगी, हजार दोष होने पर भी हो जाएगी। कलिकाल में ऐसी बहुत–सी वार्तायें मिलती हैं, जहाँ बिना कोई साधन–भजन किये भी केवल गौमाता की सेवा मात्र से श्रीकृष्ण दर्शन की प्राप्ति हो गयी। वल्लभ सम्प्रदाय में ऐसी वार्ता है कि गुजरात के पटेल भक्त को श्रीनाथजी की महारास लीला के दर्शन हो गये। भगवद्भजन चाहे बने न बने, गौसेवी के सेवक स्वयं गोपालजी बन जाते हैं। गाय के प्रति इष्ट भाव नहीं, अति इष्ट भाव चाहिए क्योंकि वह इष्ट की भी इष्ट है। अतः गाय के प्रति अति आराध्य भाव, अति इष्ट भाव होना चाहिए। ऐसा सुन्दर आदर्श जिस देश का रहा, जहाँ की भूमि जहाँ के जन–जन के मन में रहा है गाय के प्रति आराध्य भाव, बड़े लज्जा और बड़े कष्ट की बात है कि आज वही भूमि गाय के रक्त से नहा रही है। भारत का मानचित्र गाय के रक्त से भीग रहा है। ऐसी स्थिति में न कोई राष्ट्रभक्त हो सकता है, न गौभक्त हो सकता है, न कृष्णभक्त हो सकता है, भक्त कहलाने का तो अधिकार ही नहीं है। इस कथा महोत्सव के माध्यम से जितने भी वैष्णवजन यहाँ पधारे हैं, वे संकल्पित होकर यहाँ से जायें। गौवंश की सेवा भी यदि अपना दायित्व समझ के कर लिया तो कम से कम भारत का जो मानचित्र गौरक्त से भीज रहा है, यह देश गौवंश के कलंक से छूट जायेगा। देश की अवनति का कारण हम सब लोग हैं। देश के उत्थान में अवरोध का कारण हम लोगों की गाय के प्रति नगण्य भावनाएं हैं। इसलिए शरीर से, मन से, अर्थ से, जैसी सामर्थ्य ठाकुरजी ने जिसे दी है, वह गौसेवा अवश्य करे और कुछ भी न कर सके तो कम से कम

मानसिक प्रार्थना, नाम–संकीर्तन आदि गौवंश की रक्षा के लिए प्रत्येक भारतीय को करना चाहिए। बहुत आवश्यकता है इस समय गौवंश के संरक्षण की।

गौ–आराधन से महारास–दर्शन

गायों का संरक्षण, पालन–पोषण करने से श्रीकृष्ण का नाम गोविन्द हुआ। नित्य रासमयी भूमि में गायों के कारण उस भूमि का नाम गौलोक हुआ। वेदों में लिखा है–

'यत्र गावो भूरिश्रृंगाः अयासः व्रजन्ति गावो यस्मिन् स व्रजः।'

ऋग्वेद(१/१५)

जहाँ अच्छे सींगों की दूध देने वाली गायें रहती हैं, उस भूमि का नाम ब्रज है। बिना गाय के ब्रज, ब्रज नहीं है, बिना गाय के गोपाल जी आने वाले नहीं हैं। गायों के परम भक्त हैं श्रीगोपालजी। जिनके चरणों में हाथ लगाने से लक्ष्मीजी डर जाती हैं कि कहीं कोमल–कोमल चरणों में पीड़ा न हो जाए और वही गोपालजी जब गैयाओं के पीछे भागते हैं तो पादुका भी नहीं पहनते हैं, काँटे–कुश–कंकड़ों में ऐसे भागते हैं कि गोपियों को देखकर व्यथा होती है मन में और वे कहती हैं–

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्। शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति।। (श्रीमद्भागवत १०/३१/११)

हे नाथ ! आप वन में नंगे पाँव गौचारण के लिए जाते हो, जिन चरणों को छूने में लक्ष्मी जी भी घबराती हैं, उन चरणों से आप गायों के पीछे काँटों, कंकडों–पत्थरों पर भागते हो, आपको पीड़ा नहीं होती है ? हमें तो बहुत व्यथा होती है। जिस हृदय में गौ–सेवा की भावना होती है, उसी हृदय में गोपालजी आते हैं, कितने ही भक्तों को केवल गौ–सेवा के द्वारा गोपालजी की प्राप्ति हो गई।

गुजरात में एक गौभक्त हुए हैं पटेलजी, वह जब ब्रज में आये तो गिरिराज गोवर्धन में श्रीनाथजी के अनन्य सेवक गुसाईं विट्ठलनाथजी के शिष्य हो गए, उन्होंने गुसाईं जी से प्रार्थना की– महाराज ! मैं तो पढ़ा–लिखा नहीं हूँ, निरक्षर हूँ, कुछ कार्य तो करना जानता नहीं, मुझे कोई सरल–सी कल्याणकारी सेवा बता दीजिये। गुसाईं जी बोले– ''ठीक है भैया ! तुम श्रीनाथजी की गायों की सेवा किया करो और अन्य सेवायें न बन सके तो कोई बात नहीं, केवल गौ–सेवा ही प्राणप्रण के साथ करो।'' गौ–सेवा करते–करते उस पटेल भक्त की प्रबल गौ–निष्ठा हो गई। गुसाईं जी ने श्रीनाथ जी के भंडारी से कह रखा था कि इस पटेल भक्त को प्रतिदिन श्रीनाथ जी का प्रसाद दे दिया करना, यह श्रीनाथ जी की गायों का सेवक है। पटेल भक्त आते और प्रतिदिन श्रीनाथ जी का प्रसाद पा जाते। एकबार बहुत भारी वर्षा हुई। पटेल ने गायों के पैर के नीचे रेत बिछा दी जिससे गायों के पाँव कीचड़ में न फँसें, पटेल ऐसी गौ सेवा करते कि गायों को खिलाकर फिर खाते, गायों को सुलाकर पीछे स्वयं सोते। एक दिन गुसाईं विट्ठलनाथजी ने श्रीनाथजी को जब भोग लगाया तो श्रीनाथजी अपने पीताम्बर में भोग का थाल छिपाकर गौशाला में पटेल के पास आये और बोले भैया ! तूने गौ–सेवा में व्यस्त रहने के कारण कुछ नहीं खाया तो मैंने भी कुछ नहीं खाया। देख, मैं तेरे लिए यहीं अपने भोग का थाल लाया हूँ। चलो, हम दोनों यहीं बैठकर साथ में खाते हैं। इस प्रकार दोनों प्रेम से खाने लगे। पटेलजी बोले– गोपालजी! आप इसी प्रकार रोज प्रसाद यहीं ले आया करें तब तक मैं गौसेवा का समस्त कार्य अच्छी प्रकार से कर लिया करूँगा। श्रीनाथजी बोले– ठीक है भैया! मैं तुम्हारे लिए प्रतिदिन यहीं प्रसाद ले आया करूँगा। इस प्रकार श्रीनाथजी नित्य प्रसाद गौशाला में लाते और पटेलजी साथ बैठकर पाते। एक दिन भंडारी ने गुसाईं जी से कहा– महाराज! अब तो पटेल भक्त प्रसाद पाने मेरे पास आता ही नहीं है, पता नहीं, कहाँ खाता–पीता है। गुसाईं जी ने पटेल से पूछा– 'आजकल तुम कहाँ प्रसाद पाते हो?' पटेलजी ने कहा– 'आजकल श्रीनाथजी मेरे पास यहीं गौशाला में ही प्रसाद ले आते हैं, इसलिए कहीं जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। वह इतना भोला था कि उसे पता ही नहीं था कि श्रीनाथजी का स्वयं चलकर किसी को प्रसाद पवाना इतनी सरल उपलब्धि नहीं है। पटेल की भोली सहज प्रीति को जानकर गुसाईं जी के नेत्रों में अश्रु छलक आये, वह उसकी गौसेवा से प्रसन्न हो गये। अब तो श्रीनाथजी प्रतिदिन अधिकतर समय पटेलजी के साथ ही रहते, उसके साथ खेलते, कभी–कभी उसके पास अपना पीताम्बर छोड़ आते, कभी लकुट, कभी वंशी और कभी मयूरपंख छोड़ आते। गुसाईं जी समझ गये कि अब श्रीनाथजी पटेल भक्त का साथ एक पल को भी नहीं छोड़ना चाहते। एक दिन गुसाईं जी ने पटेल को बुलाकर कहा– 'अब तो तू गौसेवा को छोड़कर श्रीनाथजी का पौरिया बन जा, श्रीनाथजी के द्वार पर पहरेदार बनकर खड़ा रहा कर तो नाथजी तेरा दर्शन यहीं कर लिया करेंगे और उन्हें कहीं

जाना नहीं पड़ेगा।' अब तो पटेलजी गौसेवक से ठाकुरजी के पौरिया बन गये। पौरिया का तो काम ही रहता है – श्रीनाथ जी की वस्तुओं की देखभाल करना, रात भर वह जागते कि श्रीनाथजी को नींद आ रही है कि नहीं, कहीं वह अस्वस्थ तो नहीं हैं ? एकदिन शरद पूर्णिमा की रात्रि को श्रीनाथजी गोपियों के साथ रास करने के लिए चंद्रसरोवर गये। पटेल पौरिया ने देखा कि नाथजी रात के समय कहीं जा रहे हैं तो वह भी उनके पीछे–पीछे चल पड़ा। श्रीठाकुरजी चंद्रसरोवर पहुँचे, वहाँ गोपियों के साथ उनकी रासलीला का शुभारम्भ हुआ। श्रीमद्भागवत में वर्णित रासलीला में श्रीकृष्ण की प्रधानता है जबकि चन्द्रसरोवर की रासलीला में राधारानी की प्रधानता है, वहाँ श्रीजी के विरह में ठाकुरजी कभी इधर गिरें, कभी उधर गिरें, जहाँ–तहाँ सर्वत्र उनके आभूषण भी गिरने लगे। पौरिया के रूप में पटेल भक्त कभी ठाकुरजी की वंशी उठाये, कभी लकुट, कभी मुकुट आदि आभूषणों को उठाये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि ठाकुरजी को हो क्या गया है? सारी रात यह लीला चलती रही फिर सुबह होने पर श्रीनाथजी अपने मंदिर में आ गये, उनके पीछे–पीछे पटेल पौरिया भी आ गये। पौरिया श्रीनाथजी से बोले– नाथजी ! गुसाईं जी द्वारा दी गयी अपरस की सेवा करते–करते मैं तो हार गया और आप अपरस को भ्रष्ट करते हुए नहीं हार रहे, आज तो मैं गुसाईं जी से आपकी शिकायत करूँगा। जब गुसाईं जी प्रातः काल की मंगला आरती करने के लिए आये तो पौरिया उनसे श्रीनाथजी की शिकायत करने लगा–जै जै ! आपने मुझे अच्छा पौरिया बनाया। आज तक तो इनकी कमी को कोई नहीं पकड़ पाया लेकिन मैंने देखा कि श्रीनाथजी ने तो अपरस की सेवा में मंदिर के अन्दर न जाने कितनी लुगाइयों को घुसा रखा है, और तो और नाथजी रात को चन्द्रसरोवर चले गये, उनके पीछे पीछे ढ़ेर सारी लुगाइयाँ भी पहुँच गयीं और ये लोग रात भर खूब नाचे लुगाइयाँ तो इतनी सुन्दर थीं कि मैं भी रात भर उनको देखता रहा। आपको विश्वास न हो तो मेरी पोट देख लो, नाचते–नाचते इनको होश नहीं रहा और इनके सारे आभूषण गिरते गये और मैं रात भर उन्हें उठाते–उठाते थक गया। गुसाईं विट्ठल नाथजी की आखों में अश्रु भर आये, उनका दय गद्गद् हो गया और वह मन में विचार करने लगे–अहो ! गौसेवा के प्रताप से इस पटेल भक्त को ठाकुरजी के नित्य रास के दर्शन हो गये। उन्होंने पटेल से कहा भैया! यह अपरस बिगाड़ने वाली बात नहीं है , तुमको नाथजी की रासलीला के दर्शन हो गये। जिसका दर्शन बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों और लक्ष्मी जी तक को दुर्लभ है।

गौभक्त ही गोपालाराधक

(गौभागवत(२७/११/२०१७) से संग्रहीत)

माताजी गौशाला में जिस तीव्रता से गौ–वंश की वृद्धि हो रही है उसके मूल में पूज्य श्री बाबा महाराज हैं। उनकी प्रेरणा से काफी लोगों ने गौ–संरक्षण का संकल्प लिया। कोई भी कार्य निःस्पृहता के साथ किया जाये, निष्काम भाव से किया जाए, जैसा भागवत धर्म कहता है तो वह अनीहा भाव ही सब कार्य पूर्ण कर देता है।

अनीहानीहमानस्य महाहेरिव वृत्तिदा।

जिस समय उत्तरा मैया ब्रह्मास्त्र को अपनी ओर आते देखकर भगवान् श्रीकृष्ण की ओर दौड़ी तो प्रभु ने अंगुष्ठ मात्र रूप बनाकर उत्तरा जी के गर्भ में प्रवेश किया और ब्रह्मास्त्र को शान्त किया तथा परीक्षितजी की रक्षा की। परीक्षित जी के गुणों के विषय में जब युधिष्ठिर जी ने ब्राह्मणों से पूछा कि ये बालक कैसा होगा, आप लोग भविष्यवाणी कीजिये। तो एक ही बालक के सम्बंध में ब्राह्मणों ने बहुत से पूर्ववर्ती राजाओं के गुण बताये और ऐसे–ऐसे दिव्य गुणों को ब्रह्मणों ने परीक्षितजी के बारे में बताया जैसे कि यह बालक इक्ष्वाकु के समान प्रजा पालक होगा, रामजी के समान सत्संग का प्रेमी और ब्राह्मणों का भक्त होगा, शिवि के समान दाता होगा, भरत जी के समान वीर और यज्ञ करने वाला होगा, सहस्रबाहु अर्जुन और अपने पितामह अर्जुन के समान धनुर्धारी होगा, समुद्र के समान गम्भीर होगा, हिमालय के समान तपस्वियों को आश्रय देने वाला होगा, पृथ्वी के समान क्षमाशील होगा, ब्रह्मा के समान समदर्शी होगा, शंकर जी के समान कृपालु होगा और भगवान विष्णु के समान सब जीवों का आश्रय दाता होगा, रन्ति देव की तरह दयालु होगा, प्रह्लादजी के समान सद्गुणों का भण्डार होगा और भगवान श्रीकृष्ण का परम भक्त होगा। इस तरह परीक्षित जी में अनेक दैवीय गुण थे । परीक्षित जी के अन्दर जो इतने गुणों का समावेष था, उसके मूल में, उनके मातृ–पितृकुल की गौ–भक्ति थी। संसार में जहाँ भी कोई वैशिष्ट्य देखने को मिलेगा, उसके मूल में गौमाता का अनुग्रह, गौमाता की कृपा ही होगी। परीक्षित जी का पितृवंश, पाण्डव लोग परम गौभक्त थे। युधिष्ठिर जी के आधीन आठ लाख गौशालायें थी, हर एक गौशाला के १०० वर्ग थे, इतना विशाल गौवंश

उनके पास था और मातृकुल में गौभक्ति ऐसी थी कि परीक्षित जी के नाना विराट जब राज्य कर रहे थे, उस समय अज्ञातवास की अवधि में पाँचों पाण्डवों ने राजा विराट के यहाँ गुप्त रूप से रहकर नौकरी की। भीमसेन रसोईया बने, नकुल–सहदेव अश्वशाला और गौशाला की देखरेख करने लगे, अर्जुन उत्तरा को नृत्य सिखाते थे। पाण्डवों के अज्ञातवास के बारे में यह शर्त थी कि यदि कौरवों को अज्ञातवास का i r k p y x ; k r ksi q%i k Mokad ks१२ वर्ष का वनवास और १ वर्ष का अज्ञातवास करना होगा। जब पाण्डवों के अज्ञातवास की अवधि पूर्ण होने को थी, उस समय दुर्योधन भीष्म पितामह के पास गया और बोला – पितामह! कृपा करके बताएं कि इस समय पाण्डव कहाँ हैं क्योंकि उनके बारे में आपको पता न हो, ऐसा तो सम्भव ही नहीं है। भीष्म पितामह ने कहा – दुर्योधन ! मुझे कुछ पता नहीं कि इस समय पाण्डव कहाँ हैं। हाँ, मैं संकेत जरूर दे सकता हूँ कि पाण्डव जहाँ होंगे, वहाँ की भूमि का स्वरूप अवश्य बता सकता हूँ, जहाँ पाण्डव रहेंगे, वहाँ गौवंश की अवश्य वृद्धि होगी, वहाँ गौवंश बहुत बढ़ रहा होगा। जहाँ भक्त रहेंगे, वहाँ गौवंश की अवश्य वृद्धि होगी और गौवंश जहाँ निर्भीक होकर श्वांस ले, उसके बारे में महर्षि च्यवन ने महाभारत में कहा है–

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुन्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति।।

(महाभारत, अनुशासनपर्व ५१/३२)

जिस देश में गौवंश निर्भीक होकर श्वांस लेता है, उस देश में होने वाले पापों को गौमाता अपनी श्वांस से ही नष्ट कर देती हैं। वह भूमि निष्पाप होती है, वहाँ रहने वाले लोग निष्पाप होते हैं। गोपाल चम्पू में भी उल्लेख है कि जिस समय श्यामसुन्दर को लेने के लिये अक्रूर जी मथुरा में आये तो यशोदा मैया घबरा गयीं कि मेरो लाला असुर कंस के नगर में जा रह्यो है तो कहीं कोई अनिष्ट न हो जाये। श्यामसुन्दर मैया से बोले– अरी मैया! जब तक तेरे गोष्ठ में गायों की वृद्धि होती रहेगी तब तक तेरे लाला को अनिष्ट करने वाले संसार में कोई नहीं है। तेरे गोष्ठ की गौवृद्धि सदा मंगल करती रहेगी, मेरा कल्याण करेगी। ठाकुर जी की रक्षा भी गौमाता द्वारा हुई। पूतना वध के पश्चात्

गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।

(श्रीमद्भागवत १०/०६/२०)

बाल गोपाल को गौमूत्र से स्नान कराया गया, शरीर पर गौरज लगायी गयी, गाय की पूँछ से झाड़ा दिया गया। सबके रक्षक गोपाल की भी गायें ही रक्षिका हैं। इसीलिये भीष्म पितामह ने दुर्योधन से कहा कि जहाँ पाण्डव होंगे, वहाँ गौवंश बहुत अधिक बढ़ गया होगा। उस समय पता चला कि भारत में सबसे अधिक गौवंश राजा विराट के यहाँ है। दुर्योधन ने महाराज विराट के यहाँ से साठ हजार गायों का अपहरण करवा लिया। राजा विराट और उनके पुत्र उत्तर कौरवों से युद्ध करने गये लेकिन उनकी विशाल सेना को देखकर भयभीत हो गये तब गौरक्षा के लिये अर्जुन ने आकर कौरवों से युद्ध किया। इस तरह परीक्षित के मातृकुल में भी गौभक्ति थी और पितृकुल में भी ऐसी गौभक्ति थी कि एक बार किसी ब्राह्मण की गायों को चोर चुरा के ले गये थे तो उस ब्राह्मण ने अर्जुन की दुहाई देकर कहा–

यह कैसा क्षत्रियों का राज्य है, जिसमें ब्राह्मणों की गायों की चोरी हो जाती है, अर्जुन मेरी रक्षा करो। इस प्रकार उस ब्राह्मण ने अर्जुन को पुकारा। उस समय अर्जुन का गाण्डीव धनुष महाराज युधिष्ठिर के कमरे में था। पाण्डवों का द्रोपदी के साथ विवाह होने पर व्यासजी महाराज ने ऐसी व्यवस्था बनायी थी कि महारानी द्रोपदी एक वर्ष तक युधिष्ठिर के साथ, एक वर्ष भीम के साथ, एक वर्ष अर्जुन और एक वर्ष नकुल और सहदेव के साथ रहेंगी और जिस समय द्रोपदी का निवास युधिष्ठिर के साथ होगा, उस समय यदि कोई भाई युधिष्ठिर के कमरे में जायेगा तो उसको १२ वर्ष का वनवास करना होगा। जिस समय ब्राह्मण ने आतुर होकर गौरक्षा हेतु अर्जुन को पुकारा, उस समय अर्जुन का गाण्डीव युधिष्ठिर के कमरे में रह गया था और उस समय उनके कमरे में जाने का मतलब था १२ वर्ष का वनवास किन्तु अर्जुन ने मन में विचार किया कि भले ही मुझे १२ वर्ष वनवास में व्यतीत करना पड़े, उसे मैं सहन कर लूँगा परन्तु गौवंश पर अत्याचार मैं कदापि सहन नहीं कर सकता। इसलिये अर्जुन युधिष्ठिर जी के कमरे में गये। यद्यपि युधिष्ठिर जी ने अनुचित नहीं समझा, गौ–ब्राह्मण की रक्षा के लिये उनके कमरे में प्रवेश करने को युधिष्ठिर जी ने गलत नहीं माना किन्तु अर्जुन ने पहले तो ब्राह्मण की गायों की रक्षा करके उन्हें ब्राह्मण को लाकर दिया और तत्पश्चात् युधिष्ठिरजी के कमरे में न जाने का नियम उल्लंघन होने के कारण १२ वर्ष वनवास के लिये चले गये। इस तरह १२ वर्ष का वनवास अर्जुन ने स्वीकार कर लिया किन्तु मेरे सामने किसी गाय पर अत्याचार हो इसे अर्जुन सहन नहीं कर पाये। इसलिए परीक्षित जी के पितृकुल में भी अतिशय गौभक्ति थी और मातृकुल में भी परम गौभक्ति थी। मातृ–पितृकुल की ऐसी अनुपम गौभक्ति के प्रभाव से ही परीक्षित जैसे राजा के

अन्दर पूर्ववर्ती अनेक महान राजाओं के दिव्यगुणों का समावेश देखा गया और सबसे बड़ा गुण यह था कि वह भगवान कृष्ण के परम भक्त थे। गौभक्ति ही इन विलक्षण गुणों के मूल में थी। बिना गौभक्ति के कृष्ण भक्ति का होना भी कठिन है। जो गौभक्त है, वही गोपाल का भी भक्त है। इसलिए गौसेवा की भावना हर कृष्णभक्त के चित्त में होनी चाहिये। बिना गौसेवा के भाव के गोपाल की भक्ति पूर्ण नहीं हो सकती। महाभारत में ऐसा लिखा है कि जिस घर में गाय नहीं है, वह घर, घर नहीं है, वह श्मशान है। भला कहीं ऐसे श्मशान गृह में भगवान आयेंगे। चाहे कितनी कृष्ण–सेवा कर लो लेकिन ठाकुर जी गाय विहीन श्मशान रूपी घर में कभी नहीं आयेंगे। गोपाल जी की बाललीला के सम्बंध में भागवत में वर्णन है कि जब श्यामसुन्दर गौरस की चोरी के लिये जाते थे, तो जिस घर में गौरस नहीं मिलता था, उस घर में, उस घरवालों पर बहुत क्रोध करते थे और क्रोधवश कभी किसी गोपी के सोते हुये बालक को चुटकी काट लेते, कभी लिपे–पुते घर में पानी फैला देते थे। जो स्थान गौसेवा रहित है, वह स्थान और वहाँ रहने वाले सभी लोग ठाकुरजी के कोपभाजन बन जाते हैं इसलिए यदि ठाकुर जी की प्रियता चाहिए, उनकी कृपा चाहिए, उनका अनुग्रह चाहिए तो गौसेवा अवश्य करें। गौसेवा का भाव अपने मन में रखें। गौभक्त परीक्षितजी ने जिस समय दिग्विजय के समय कलियुग को गौ और वृषभ पर अत्याचार करते देखा तो इस अत्याचार को परीक्षितजी देख नहीं पाये और उन्होंने कलियुग पर शासन किया। महाभारत में लिखा है कि जिस देश में, जिस भूमि में अहिंसा का राज्य नहीं है, उस भूमि में धर्म नहीं हो सकता, जिस भूमि में गौवध जैसा महापाप हो रहा हो उस भूमि में रहने वाले चाहे जितना धार्मिक कृत्य कर लें परन्तु एक भी धार्मिक अनुष्ठान का लाभ उन्हें नहीं मिलेगा जब तक उस भूमि का गौवध होता रहेगा। ऐसी स्थिति में विचार करें कि चाहे कोई कितना बड़ा साधक हो, तपस्वी हो, दानी हो, जिस देश में गौवध का कलंक रहेगा उस देश में किसी भी धार्मिक अनुष्ठान का लाभ नहीं मिलेगा। आज क्या कारण है कि इतने बड़े–बड़े विश्व शान्ति महायज्ञ हो रहे हैं और जितने महायज्ञ हो रहे हैं उतना ही देश–विदेश में उग्रवाद–आतंकवाद बढ़ता जा रहा है, कहीं शान्ति दिखाई नहीं पड़ रही है। इसका एकमात्र कारण है गौवंश का ह्रास, जब तक इस भूमि में गौहत्या होती रहेगी, तब तक कोई भी धार्मिक अनुष्ठान लाभ नहीं दिखायेगा। परीक्षित जी ने जब गौवंश पर अत्याचार देखा तो वह सह नहीं पाये। आज हमारे देश में गौवध बढ़ने का कारण है मानसिक विकृतियाँ। वित्तमंत्री कहते हैं कि अनुपयोगी पशु को मारने से और उसका माँस बेचने से हमारे देश को लाभ होगा। वनमंत्री कहते हैं कि वन में जाने से पेड़–पौधे खाने से वन को नुकसान होगा इसलिए पशुओं का निषेध किया जाये। किसान कहते हैं कि अब नये–नये आविष्कार हो गये, बढ़िया रासायनिक खाद का प्रयोग करें, ट्रैक्टर का प्रयोग करें, वृषभ को कब तक चरायेंगे–खिलायेंगे और बैल की खेती से वैसा लाभ नहीं होता जैसा लाभ होना चाहिये। ये सब मानसिक विकृतियाँ ही गौवध में मूल कारण बनी हुई हैं। आज आवश्यकता है हम लोगों को अपनी मानसिकता सुधारने की। एक समय था जब भारत में उतने मनुष्य नहीं थे जितना गौवंश था। उसके बाद गौवंश का इतना विनाश हुआ कि अब अस्सी करोड़ हिन्दू हैं तो आठ करोड़ गायें हैं, यदि दस प्रतिशत हिन्दुओं के मन में भी गौरक्षा की भावना जाग्रत हो जाये तो आज भी भारतवर्ष गौवंश के कलंक से छूट सकता है यदि दस प्रतिशत भी हिन्दुओं के मन में गौसेवा का भाव जाग्रत हो जाये लेकिन यह बड़ी बिडम्बना है कि अनुपयुक्त पशु कहकर हम लोग गौवंश के वध की इजाजत दे देते हैं। मुगलकाल में गोवंश का ह्रास नहीं हुआ था। बहादुरशाह जफर के शासनकाल में ईद के दिन कड़ा पहरा रहता था कि भारतभूमि में उस दिन भूल से भी कोई गौवध न करें। बाबर जब मरने लगा तो उसने अपने पुत्र हुमायूँ को एक ही आदेश दिया था कि देखो, यदि तुम भारत की जनता के धर्मप्राण बने रहे तभी यह जनता तुम्हें सम्मान दे पायेगी। कभी भी हिन्दुओं की भावनाओं का हनन मत करना यदि तुम एक सफल शासक बनना चाहते हो और जहाँ हिन्दुओं की भावना बहुत दृढ़ हो गौवंश के प्रति, अपने वेदों के प्रति, अपने आचरण के प्रति तो उसका विरोध मत करना अगर एक सफल शासक बनना चाहते हो। बाबर के कहने पर हुमायूँ के अन्दर गौ के प्रति ऐसा भाव जाग्रत हुआ कि हुमायूँ के बाल्यकाल में उसकी मां की मृत्यु हो गयी थी, एकबार वह ईरान जा रहा था, रास्ते में कहीं उसका शिविर पड़ा था। वह बहुत भूखा–प्यासा था तो किसी बावर्ची ने उसे खाने के लिये गौमाँस परोस दिया। हुमायूँ ने उस थाली को फेंक दिया और बावर्ची से कहा– अरे मूर्ख! बाल्यकाल में मेरी मां मर गयी थी तब गौदुग्ध से ही मेरा पोषण हुआ और क्या अब उसी गाय का माँस खाऊँगा, आज के बाद फिर कभी ऐसा अपराध किया तो तुझे मृत्युदण्ड दे दूँगा। ऐसा था हुमायूँ। परम्परा से यही उपदेश हुमायूँ पुत्र

अकबर को मिला, उसको स्वामी हरिदास जी ने गौवध पर प्रतिबन्ध लगाने की आज्ञा दी थी, उसके बाद जहाँगीर के समय में भी गौवध पर प्रतिबन्ध रहा। जहाँगीर का पुत्र शाहजहाँ इस्लाम का कट्टर अनुयायी था, उसने फिर से गौवध आरम्भ कर दिया था लेकिन उस काल में भारतवर्ष में ऐसे–ऐसे महापुरुष उत्पन्न हुये जिन्होंने धर्म की रक्षा की। शाहजहाँ ने एकबार अपने मंत्रियों से पूछा कि हिन्दूधर्म का इतना दमन करने के बावजूद भी यह धर्म समाप्त क्यों नहीं हुआ, इसका कारण क्या है ? तो लोगों ने कहा– महाराज! जब तक संतों की जमातें भारत में घूमती रहेंगी तब तक सनातन धर्म को, हिन्दुत्व को कोई भी नष्ट नहीं कर पायेगा चाहे आप जितना भी हिन्दू धर्म को नष्ट करने का प्रयास करो, कोई सफलता नहीं मिलेगी। ऐसा सुनकर शाहजहाँ ने संतों की जमातों पर प्रतिबन्ध लगा दिया और आदेश दिया कि भारत में कोई संत भ्रमण नहीं करेगा। प्राचीनकाल में संत लोग भारत में जमात लेकर भ्रमण करते थे, जगह–जगह धर्म का प्रचार करते थे, धर्म के प्रति लोगों को दृढ़ करते थे, आस्तिक बनाते थे। उस काल में शासन की तरफ से संतों की जमात पर भारत भ्रमण करने के प्रति प्रतिबन्ध जारी होने के बावजूद भी संत मलूकदास जी ने इस प्रतिबन्ध को स्वीकार नहीं किया और वह संतों की जमात लेकर भारत भ्रमण के लिये चल पड़े, भ्रमण करते–करते जब वह दिल्ली पहुँचे तो लोगों ने शाहजहाँ को बताया कि एक हिन्दू फकीर संतों की जमात लेकर पूरे देश में घूम रहा है और वह धर्म का प्रचार करके हिन्दुओं को सुदृढ़ बना रहा है, शाहजहाँ ने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि उस फकीर को कारागार में बन्द कर दिया जाये। मलूकदासजी तो सिद्ध संत थे, उन्हें जेल भेजा गया तो उन्होंने कैदियों से कहा– भइया, भगवान के नाम का कीर्तन करो, भगवन्नाम मनुष्य को भवसागर के बन्धन से मुक्त करने वाला है, क्या यह तुमको कारागार के बन्धन से मुक्त नहीं करेगा ? मलूकदासजी के उपदेश को सुनकर जितने भी कैदी जेल में बन्द थे, जिनको दण्ड के रूप में आटे की चक्कियाँ चलानी पड़ती थीं, वे सब मलूकदास जी के साथ नाम–संकीर्तन करने लगे और मलूकदासजी के दृढ़ विश्वास के कारण चक्कियों को चलाने की जरूरत नहीं पड़ती थी, चक्कियाँ बिना चलाये अपने आप चलने लगीं, कैदियों के हथकड़ी–बेड़ी के सारे बन्धन खुल गये, जेल के फाटक खुल गये। अब तो मलूकदासजी जेल के सब कैदियों को लेकर पूरे शहर में हरिनाम–संकीर्तन करते हुए घूमने लगे। यह सब चमत्कार देख–सुनकर शाहजहाँ इतना तो समझ गया कि यह कोई साधारण फकीर नहीं है, यह तो कोई करामाती फकीर है, इसके साथ छेड़–छाड़ करना मेरे लिये घातक हो सकता है। शाहजहाँ ज्यादा तो कुछ नहीं बोला लेकिन जब मलूकदासजी वहाँ से चले गये तो भक्तापराध के कारण शाहजहाँ के सारे शरीर में भयंकर जलन होने लगी। वह समझ गया कि उस फकीर के प्रति मेरा अपराध मुझे ले बैठा, अब क्या किया जाये तब शाहजहाँ वृन्दावन आया और वहाँ मलूकदास के चरणों में गिरकर उनसे क्षमा माँगी तब उन्होंने शाहजहाँ से कहा– ''इन कुछ बातों का अवश्य ध्यान रखना, कभी भी हिन्दू धर्म के प्रति हिन्दुओं की आस्था को आघात मत पहुँचाना, धर्म परिवर्तन मत करना, जजिया कर की प्रथा को फिर से चालू मत करना और इस देश की पवित्र भूमि में कभी भी गौवध नहीं होने देना।''

इस देश में जो भी धर्म का अस्तित्व दिखाई दे रहा है, उसके मूल में इन संतों का ही अनुग्रह है। एकबार काशी के विद्वानों ने स्वामी रामानन्दजी से प्रार्थना की महाराज! इन यवनों ने हिन्दूधर्म पर बहुत अत्याचार किया है, सारा धर्म भ्रष्ट किया जा रहा है, धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। रामानन्दाचार्य जी ने अपने मन में कुछ संकल्प किया, उस संकल्प का यह प्रभाव हुआ कि देश भर में जितने भी मुसलमान थे, मस्जिदों में अजान करते समय, ''अल्लाहो अकबर''कहते समय उन सबके गले बन्द हो गये, मुँह से आवाज निकलना बन्द हो गई। वे सब समझ गये कि हम लोग हिन्दू धर्म पर जो अत्याचार कर रहे हैं, यह सब उसी का दुष्परिणाम है। अब किससे क्षमा माँगी जाये, कौन है ऐसा संत जिससे क्षमा माँगने पर इस संकट से मुक्त हुआ जाये तो लोगों ने उन्हें स्वामी रामानन्दजी का नाम बताया। अब तो दौड़कर सभी मुल्ला–मौलवी रामानन्दजी के पास गये। जैसे ही ये मुल्ला–मौलवी स्वामी रामानन्दजी के आश्रम पहुँचे तो उन्होंने जोर से शंखनाद किया, जैसे ही उन्होंने शंख बजाया, उस शंख की आवाज को ही सुनकर समस्त मुल्ला–मौलवी बेहोश होकर वहाँ गिर पड़े। रामानन्दजी हँसकर बोले– देखो, यही इनकी ताकत है, थोड़ा–सा शंखनाद नहीं सुन पाये, बेहोश होकर गिर पड़े। थोड़ी देर बाद जब मुल्ला–मौलवियों को होश आया तो वे रामानन्दाचार्य जी के चरणों में गिर पड़े और बोले– महाराज! आज के बाद हम ऐसी हरकत दुबारा नहीं करेंगे, आप हमें क्षमा कर दीजिये। उस समय रामानन्दजी ने उन्हें कुछ आदेश दिये– ''किसी

भी हिन्दू को मस्जिद के सामने पालकी से उतारना उचित नहीं है, ऐसा मत करना, जजिया कर नहीं लगाया जाये, हर व्यक्ति अपने धर्म का पालन करने के लिये स्वतंत्र है, इसमें किसी भी प्रकार की बाधा न डाली जाये और देश में गौवध न होने पाये, गौवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये।'' इस तरह गौवध पर प्रतिबन्ध संतों ने लगवाया। इसीलिये शाहजहाँ के काल में आगे फिर कभी गौवध नहीं हुआ। शासन व्यवस्था ही जब गौवध को बढ़ावा दे तो फिर क्या किया जा सकता है। चाहे वह वित्तमंत्री है, चाहे वह पर्यावरण मंत्री है, चाहे वन मंत्री है अथवा कृषि मंत्री है। इन सबकी मानसिक विकृतियाँ ही गौवध के लिये दोषी हैं। शासक हो तो परीक्षितजी जैसा जो एक वृषभ पर होने वाले अत्याचार को सह नहीं पाये। उनको श्रीमद्भागवत कथा का अमृत पान कराने वाले परमहंस शिरोमणि शुकदेव जी भी बहुत बड़े गौभक्त थे। गो दोहनं क्वचित्– जितनी देर में एक गाय का दोहन हो, केवल उतनी देर तक ही किसी स्थान पर रुकते थे। जो गौभक्त है, कृष्ण भक्त होने में संदेह कैसा ? कोई गौभक्त ही कृष्ण भक्त हो सकता है। महाभारत में शुकदेवजी की गौभक्ति का वर्णन किया गया है। युधिष्ठिर जी ने भीष्म पितामह से प्रश्न किया था – इस संसार में सबसे पवित्र वस्तु क्या है, यह आप कृपा करके मुझे बतायें, जो पवित्र को भी पवित्र करने वाली है, श्रेष्ठ में भी सर्वश्रेष्ठ है। उस समय भीष्म जी ने युधिष्ठिर जी को शुकदेव जी और वेदव्यास महाराज का संवाद सुनाया। शुकदेव जी ने एक बार अपने पिता से पूछा– संसार में पवित्रों को भी पवित्र करने वाली वस्तु क्या है ? यज्ञ का यज्ञत्व क्या है ? और यज्ञ की प्रतिष्ठा क्या है ? कृपा करके बतायें। तब व्यास जी ने एक ही वाक्य में उनके सब प्रश्नों का समाधान कर दिया। ''गायों में ही सब यज्ञों की प्रतिष्ठा है। गाय और गौधन ही सबसे पवित्र वस्तु है और परम कल्याणकारी वस्तु है।'' इस उपदेश को सुनकर शुकदेव महाराज जी के हृदय में गौभक्ति का उदय हुआ, वह केवल गौदुग्ध का ही पान करते थे। इसका श्रीमद्भागवत में संकेत fd ; kx ; kg& **गोदोहनं क्वचित्–** जितनी देर गोदोहन होता है, उतनी देर तक ही शुकदेव जी किसी स्थान पर रुकते हैं केवल गोदुग्ध पान के लिये। श्रीमद्भागवत के वक्ता शुकदेव जी बड़े ही गौभक्त हैं और श्रोता परीक्षितजी के ऊपर मातृ–पितृकुल की गौभक्ति का प्रभाव होने के कारण वह उत्तम गौभक्त थे।

गौ–दान से गोलोक–गमन

श्रीगौभागवत कथा (०८नवम्बर २०१७) से संग्रहीत

चाणक्य ने अपने राजनीतिशास्त्र को अर्थशास्त्र का नाम दिया और उसमें बहुत विस्तार से गौ–माहात्म्य का वर्णन किया और सबसे अधिक आग्रहपूर्वक जिस बात को उन्होंने कहा है, वह यही कहा है कि जिस राजा के शासन में गौवंश दुःखी हो, वह राजा स्वप्न में भी अपनी समृद्धि की कल्पना न करे। युधिष्ठिर महाराज को भी भीष्म पितामह ने पहली आज्ञा दी– आप स्वयं गौ सेवा करें। युधिष्ठिरजी के पास ११ करोड़ गायें थीं। प्राचीन भारत में एक–एक राजा गौवंश से इतना संपन्न था कि दुर्भिक्ष (अकाल) की तो कोई संभावना ही नहीं थी। पुराणों में कथा मिलती है कि लक्ष्मी जी का निवास साक्षात् गौमय (गोबर) में है। जिस समय देवता गौ माता के पास आये और उनके शरीर में निवास किया तो लक्ष्मी जी को बड़ा कष्ट हुआ कि मुझे गौ माता के किस अंग में निवास मिले तो लक्ष्मी जी स्वयं गौमाता के पास आयीं और प्रार्थना की – आप कृपा करें और मुझे अपने शरीर में निवास स्थान दें। वहाँ सुरभि गाय ने कहा – "हे देवी! जहाँ से आयी हो, वही चली जाओ, तुम एक जगह तो रहती नहीं हो, तुम चंचल हो, तुम्हारी बुद्धि स्थिर है नहीं, इसलिये मैं तुम्हें स्थान नहीं दे पाऊंगी, अतः तुम जहाँ से आयी हो, वहीं पधारो। लक्ष्मी जी ने कहा– "ऐसा लगता है बिना बुलाये जो आता है, उसका सम्मान नहीं होता है। हे गौ माता! यदि आपने मेरी उपेक्षा कर दी तो मैं संसार में सभी लोगों के द्वारा उपेक्षित हो जाऊंगी, इसलिये आप मेरी उपेक्षा न करें, मुझे अपने शरीर में कहीं भी स्थान दे दें, मुझे स्वीकार है।" गौ माता ने कहा– "देवी! बाकी तो जगह देवी–देवताओं का निवास हो गया है, अगर आप चाहें तो मेरे गोबर और मूत्र में निवास कर सकती हैं।" तब गौमय (गोबर) में निवास प्राप्त कर लक्ष्मी जी स्वयं को कतार्थ समझने लगीं।

इसलिये युधिष्ठिर को सर्वप्रथम भीष्म पितामह ने यही कहा कि जब तक गौवंश रहेगा, तब तक राज्य में लक्ष्मी की कोई कमी नहीं रहेगी क्योंकि साक्षात् गाय के गोबर में लक्ष्मी जी का निवास है। गौवंश की सेवा शासक के द्वारा स्वयं होनी चाहिए और जिस राष्ट्र का संविधान ही स्वयं गौवंश की हत्या का आदेश दे दे, उस राष्ट्र की समृद्धि क्या कभी हो

पायेगी ? जब पृथ्वी ने गौ रूप धारण किया तो पृथु महाराज ने शस्त्र धारण नहीं किया, शस्त्र नीचे कर लिया और प्रार्थना की . "आपके निवास से ही तो हम समृद्ध देश की कल्पना कर सकते हैं। आप कृपा करें, आपके योग्य पात्र क्या है, दोग्धा कौन है, अगर आप मुझे बताएं तो आपके अन्नरूपी दूध को दुहने के लिए मैं उचित पात्र और दोग्धा की व्यवस्था करूँ।" तब पृथ्वी मैया ने पृथुजी के शील गुण से प्रसन्न होकर अन्नरूपी दुग्ध स्रवित करने के लिए स्वीकतृि दी, वे तैयार हुईं। भूमि में जब दोष होते हैं तब वह भाररूपिणी हो जाती है और ऐसे समय भूमि क्रन्दन करती है, बहुत क्रन्दन करती है। पहले जब लोग घर–मकान बनाते थे तो वास्तु के अनुसार किस दिशा में द्वार ठीक है, किस दिशा में देहरी ठीक है, किस दिशा में कक्ष ठीक है, ऐसा बहुत देखा करते थे। कैसी भी दोषमयी भूमि हो, वास्तुग्रंथ में ऐसा लिखा है कि अगर कोई गाय–बछड़े के साथ उस भूमि में खड़ी हो जाये और लाड़पूर्वक बछड़े को चाटे तो उस समय गाय के मुख से जो फेन निकलता है, वह फेन जब पृथ्वी पर गिरता है तो उस भूमि के सभी दोष नष्ट हो जाते हैं, इतनी सामर्थ्य गाय के फेन में है। वास्तुशास्त्र की दृष्टि से दोषयुक्त भूमि उपयुक्त हो जाती है लेकिन वही भूमि भाररूपिणी होकर, गौरूपिणी हो क्रन्दन कर अपनी ही सुरक्षा के लिए आर्त पुकार करे तो यह शासक के लिए सबसे बड़ी हानि की सूचना है। पृथुजी ने गौरूपा पृथ्वी से अन्नरूपी दूध का दोहन किया। अन्य पुराणों में ऐसी कथा मिलती है कि गौवंश के ह्रास की यदि किसी ने चर्चा भी की तो पृथुजी के आदेश से उसे मृत्युदण्ड दिया जाता था। जिस समय पंजाब प्रान्त में महाराज रणजीत सिंह का शासन था, उस समय तक भारत में यह नियम था, यह घोषणा थी कि गाय के प्रति किसी ने उत्पीड़न की बात भी कही तो उसको मृत्यु दण्ड दिया जाता था। अगर गाय को उत्पीड़ित करने की बात भी कोई कहता तो उसे हिन्दू नहीं अपितु वर्णसंकर माना जाता था। महाराज रणजीत सिंह जी ने अपने राज्य में चारों ओर यह घोषणा करवा दी थी कि कहीं भी कोई धर्म के प्रतिकूल, गौवंश के प्रतिकूल बात कहे तो तुरंत मुझे सूचित किया जाये। एक बार एक व्यक्ति उनके पास पहुंचा और बोला कि महाराज ! मैं अमुक स्थान पर खड़ा था, वहाँ एक द्वार से गायें निकल कर जा रही थीं तो कुछ गायों के उन्नत सींग द्वार से टकरा रहे थे तो वहाँ खड़ा एक व्यक्ति बोला कि इन गायों के सींग कटवा दिये जायें। महाराज रणजीत सिंह ने कहा . "उस व्यक्ति को बुलाओ मेरे पास।" जब वह व्यक्ति आया तो रणजीत सिंह ने पूछा कि तुमने ऐसा कहा था।" तो वह व्यक्ति बोला– "हाँ, दरवाजा छोटा था और गायों के सींग टकरा रहे थे तो मैंने कहा कि ये सींग कटवा दिये जायें।" रणजीत सिंह उससे बोले–"तुम हिन्दू तो नहीं लगते हो, ऐसा लगता है कि तुम वर्णसंकर हो, तुम्हारे अन्दर वर्णसंकरता का दोष है। " वह व्यक्ति बोला– "महाराज ! वैसे तो मैं हिन्दू माता पिता की संतान हूँ, बाकी अधिक बातें आप मेरी माँ से पूछ लें क्योंकि मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है" उस व्यक्ति की माँ को बुलाया गया। रणजीत सिंह ने उससे पूछा . "कहो देवी ! क्या यह तुम्हारा ही पुत्र है ?" माँ बोली "हाँ महाराज ! यह हिन्दू कन्या और हिन्दू पुरुष से ही उत्पन्न बालक है " रणजीत सिंह ने कहा– "फिर यह हिन्दुत्व के विरुद्ध बात क्यों बोलता है ?" माँ बोली– "महाराज ! जिस दिन यह मेरे गर्भ में आया था, उस दिन जब मैं प्रातःकाल उठी तो एक गौ–वधिक के ऊपर मेरी दृष्टि पड़ गयी। उस गौ–वधिक के ऊपर मेरी दृष्टि पड़ जाने मात्र से इसके अन्दर गौ–विरोध के संस्कार आ गये।"

अतः इस प्रकार से गाय के प्रति उत्पीड़न की बात भी कोई कह देता तो उसको हिन्दू नहीं वर्णसंकर माना जाता था कि यह वर्णसंकर की संतान है, हिन्दू नहीं है। आज स्थिति यह है, वास्तव में कटु सत्य तो यही है कि हम लोग अपने भावों की नगण्यता को दूसरों के सिर पर मढ रहे हैं।हमारे अन्दर स्वयं गौ–सेवा के विचार नहीं रहे, हमारे अन्दर स्वयं गौ–भक्ति का कोई महत्व नहीं रहा। आज १० प्रतिशत हिन्दू के अन्दर भी यदि गौ– भावना जाग जाये तो सम्पूर्ण राष्ट्र का गौवंश सुरक्षित रह सकता है। आज देश का दुर्भाग्य तो देखो कि भारत मांस निर्यात की मंडी बन गया है। मांस बेचने में सबसे पहला स्थान भारत का है, यह कितना दुर्भाग्य है देश का। आज से ६५ वर्ष पहले भारत सरकार के आंकड़े ऐसे थे कि वर्ष में ६०० टन गौमांस का निर्यात होता था और पिछले ६५ वर्षों में आज स्थिति यह है कि १६ लाख टन गौमांस का निर्यात भारत भूमि से किया जा रहा है। चार सौ हजार गुना गौवध इस देश में बढ़ गया है और ऐसी स्थिति में हम लोग निश्चिन्त बैठे हैं। बातें हो जाती हैं, सुनकर लोग चले जाते हैं। जिन लोगों को भगवान् ने गाँवों में निवास दिया है, जिनके पास खेती है, स्थान है तो आप सबका कर्तव्य है कि गौवंश का पालन अवश्य करें और यदि

शहरों में रह रहे हैं तो १०-२० किलोमीटर की दूरी पर आदमी अपनी फैक्ट्री भी खोल लेता है, अपना उद्योग स्थापित कर लेता है,उसके लिए १०-२० किलोमीटर भाग चला जाता है तो यदि आप घर में गौसेवा नहीं कर सकते, जगह पर्याप्त नहीं है तो १०-२० किलोमीटर की दूरी पर गौशाला खोल सकते हो, उसका सञ्चालन, संरक्षण कर सकते हो, गाय को गौग्रास खिला सकते हो। अपने बच्चों को लेकर गौशाला में जायें, संतान में भी गौभक्ति के संस्कार डालें। यदि संतान में गौभक्ति के संस्कार नहीं डालेंगे तो अपना विनाश करेंगे और संतान का भी विनाश करेंगे। अपना विनाश और आनी वाली पीढ़ियों का विनाश, यह हम लोगों द्वारा ही किया जा रहा है, किसी और के द्वारा नहीं किया जा रहा। पृथुजी महाराज ने उस समय देश में जगह–जगह पर अनेकों गौशालायें स्थापित की थीं। उन्होंने प्रजा को अवगत कराया कि गौ–विज्ञान क्या है ? गौवंश के आधार पर किस प्रकार कृषि समृद्ध होती है ? फिर से कृषकों ने गौवंश का पालन अपना धर्म समझा। गाँव और नगर बसाये गये, उनमें गौशालायें खोली गयीं, पंचायत व्यस्था बैठायी गई। स्वयं भगवान् ही पृथुजी के रूप में आये थे, अनेकों अवतारों में भगवान् ने हम लोगों को गौ सेवा के लिए प्रेरित किया है, गौसेवा का आदर्श भगवान् ने स्वयं रखा है। एक बार पृथुजी के पास नारदजी पहुँचे तो पृथुजी ने नारदजी से पूछा– "हे देवर्षे! मेरे पिता वेन ने सदा गौ, ब्राह्मण और साधुओं की निन्दा की, इस पापाचरण के दुष्परिणाम से वे बच तो नहीं पाये होंगे, जरूर उनको नारकीय यातना मिली होगी। कृपा करके मुझे बतायें कि मैं उनके कल्याण के लिए क्या करूँ। उत्तम पुत्र वही है जो अपने पितृकुल की कल्याण की बात सोचे, उसको अपना कर्तव्य/अपना धर्म माने। तब नारद जी ने पृथु जी को बताया कि आपके पिता वेन गौ–ब्राह्मण की निदा से घोर नारकीय यातनाओं में पड़ गये थे, उसके बाद वह शूकर बने और अनेकों निम्न योनियों में जन्म लिया, कुष्ठरोगी भी बने। तुम उत्तम पुत्र हो जो अपने पिता के कल्याण की बात सोच रहे हो। अगर पिता का कल्याण करना चाहते हो तो गोष्पद तीर्थ में जाकर गौदान करो।

हमारे यहाँ गौदान की परम्परा है, चूँकि गाय के पृष्ठ भाग में सूर्य केतु नाड़ी होती है, उस सूर्य केतु नाड़ी का सम्बंध एक तो सूर्य लोक और दूसरा सीधे गोलोक से होता है। मरने से पहले गोदान की जो भावना होती है, वह इसलिए होती है कि जीव ने चाहे कितना पाप किया हो लेकिन गाय की पूँछ पकड़ने से वैतरणी नदी पार करने में गौमाता सहयोग करती हैं। वह गाय की पूँछ पकड़ने से सीधे गोलोक धाम में चला जाता है। इसीलिए हमारे यहाँ गौदान की परम्परा है। इसीलिये नारद जी ने पृथु राजा से कहा कि यदि आप अपने पिता का कल्याण चाहते हैं तो आप गौदान करें। वहाँ लिखा है कि गौदान के समान पुण्य संसार में कोई दूसरा नहीं है। इन शास्त्रीय बातों पर हमें विश्वास करना चाहिये। इन्हें कपोल कल्पना नहीं समझना चाहिये। महाभारत का बड़ा प्रसिद्ध आख्यान है कि जिस समय महर्षि च्यवन गंगा–यमुना के संगम प्रयागराज में नदी की धारा में जल समाधि लिये भजन कर रहे थे तो उस समय मछुआरों ने नदी में जाल डाला और उस जल में मछलियों के साथ च्यवन ऋषि भी बाहर आ गये। अब तो मछुआरे बहुत घबराये कि क्या करें तो च्यवन ऋषि ने कहा– घबराओ मत, यह तुमने कोई अपराध नहीं किया है। उन्होंने राजा नहुष को बुलवाया और उनसे कहा कि इन मछुआरों की तो वृत्ति ही यही है। आप इन मछलियों के साथ–साथ मेरा मूल्य भी इन मछुआरों को चुका दीजिए। तब राजा नहुष ने सौ करोड़ मुद्रा, फिर एक हजार स्वर्ण मुद्रा फिर एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा दी। च्यवन ऋषि ने कहा– क्या एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा किसी ऋषि का मूल्य हो सकती हैं ? तब राजा ने आधा राज्य, फिर पूरा राज्य च्यवन ऋषि को समर्पित कर दिया। च्यवन ऋषि बोले– नहीं, अभी तुमने मेरा मूल्यांकन ठीक–ठीक नहीं किया है। अब राजा नहुष बड़े परेशान हो गये कि क्या करें, उसी समय वहाँ पर गौजात मुनि आये, गाय के पेट से जिनका जन्म हुआ था। राजा नहुष ने उनसे कहा– महाराज! एक बहुत बड़ी समस्या आ गयी है, इन मछुआरों को च्यवन ऋषि का मूल्य देना है। अपना पूरा राज्य तो इन पर लगा चुका, अब इससे ज्यादा मूल्य मेरे पास है नहीं, आप कृपा पूर्वक बतायें कि एक महर्षि का मूल्य क्या हो सकता है। गौजात मुनि ने कहा– महाराज! एक गौदान कर दो, महर्षि का मूल्य पूर्ण हो जायेगा। उसी समय राजा नहुष के सामने एक गाय लायी गयी। नहुष ने च्यवन ऋषि से पूछा– महाराज! क्या यह गाय आपके मूल्य के बराबर है ? महर्षि प्रसन्न हो गये और बोले– गौधन के समान कोई दूसरा धन नहीं है। गौधन ही परम धन है। पूरा राज्य भी एक ऋषि का मूल्य नहीं चुका पाया और जैसे ही गौजात ऋषि के परामर्श से राजा नहुष ने

च्यवन ऋषि का मूल्यांकन एक गौ से किया तो ऋषि प्रसन्न हो गये और उन मछुआरों को एक गाय दे दी गयी फिर मछुआरों ने वह गाय पुनः च्यवन ऋषि को दे दी और कहा कि इसकी सेवा आप ही कर सकते हैं। पहले राजा के द्वारा गौदान हुआ फिर मछुआरों के द्वारा पुनः च्यवन ऋषि को गोदान हो गया। च्यवन ऋषि बोले – तुम लोगों ने एक गाय का दान एक ऋषि को कर दिया तो तुम सबको गोलोक के दिव्य सुख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार इन मछुआरों को गाय का माहात्म्य न जानने पर भी एक ऋषि को गौदान करने पर गौलोक धाम की प्राप्ति हो गयी। अतः गौधन के समान कोई दूसरा धन नहीं है। गाय के गोबर और गौ मूत्र से एक प्रकार की धूप बनती है, जिसे 'गुग्गुल' कहते हैं। महाभारत में लिखा है कि गाय के गोबर और मूत्र से बने उस गुग्गुल का धूम अगर भगवान के मन्दिरों में रखकर दिया जाये, शिव मन्दिर में अगर गुग्गुल धूप का धूम दिया जाये तो बिना साधन भजन के ठाकुर जी उस व्यक्ति को अपना आलिंगन प्रदान करते हैं, उसको अपना सर्वस्व दे देते हैं केवल धूम देने मात्र से। इन गव्य पदार्थों का उपयोग किया जाये तो सहज में लोगों के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति और सहज में गौसेवा का कार्य हो जायेगा। गौशालायें आत्मनिर्भर हो सकें, इसके लिये सबको चाहिये कि गव्य पदार्थों का अधिकाधिक प्रयोग किया जाये, अपना काम चले, आवश्यकताओं की पूर्ति हो, साथ ही गौसेवा का लाभ भी सबको सहज में प्राप्त हो सके। पृथु महाराज ने अपने पिता वेन के कल्याण हेतु गौदान किया। जिस वेन ने गौधर्म, विप्रधर्म, वेद धर्म का खुलेआम विरोध किया था। राजा वेन के शासन काल में कोई गौ–ब्राह्मण की सेवा नहीं कर सकता था, वही अधार्मिक राजा एक गौदान के प्रभाव से नित्य धाम को प्राप्त हो गया। अतः मृतात्मा के कल्याण के लिये भी और जीते जी भी गौदान की परम्परा है। कितने ही लोग महाभारत के युद्ध में मारे गये थे, युधिष्ठिर जी व्याकुल थे तो भीष्म पितामह ने उनसे एक ही बात कही थी– गौवत्स द्वादशी व्रत करो, सवत्सा गाय की सेवा करो, जितने भी निरपराध लोगों की हत्या तुमने की है, उन सबकी हत्या का प्रायश्चित केवल गौसेवा से हो जयेगा। अब कितने लोग मरे होंगे महाभारत के युद्ध में, उस भयंकर पाप कर्म से केवल गौदान और गौसेवा के कारण युधिष्ठिर ने प्रायश्चित कर लिया, सब पापों से छूट गये। गौव्रती जीवन हो गया युधिष्ठिर का, फिर तो भूमि पर ही शयन करते थे, गोदुग्ध का पान करते थे गव्य पदार्थ का उपयोग करते थे इसलिये गौसेवा सबसे बड़ा प्रायश्चित कर्म है। यदि कुछ भी नहीं कर सकते हो तो गौशाला में जाकर गाय को कीर्तन ही सुना दें, शास्त्रों में लिखा है कि उनको पुराणों की कथा सुना दें। गौमाता हृदय से प्रफुल्लित होकर आशीर्वाद देंगी, प्रसन्न होंगी। गौपालन विज्ञान ने तो बहुत विशद रूप से लिखा है कि गाय के ऊपर से मक्खी–मच्छर हटा दें, किसी प्रकार के धूम को जला दें जिससे मक्खी–मच्छर गाय को परेशान न कर सकें, सहज में ही ये छोटी–छोटी बातें हमें अक्षय लाभ प्रदान कर सकती हैं।

पृथु जी द्वारा फिर से गौधन के बल पर राज्य सुखी हुआ, फिर से राज्य समृद्ध हुआ और पृथु जी बड़े गौभक्त राजा हुये हैं। पितृ कल्याण के लिये भी उन्होंने गौदान किया, गौसेवा का संकल्प लिया। ऐसे शासक निश्चित रूप से राष्ट्र का कल्याण करते हैं, राष्ट्र का हित करते हैं। बहुत सीधी–साधी गाय का दान पृथु जी ने अपने पिता के लिए किया जो अत्यन्त सीधी–साधी गाय का दान करते हैं, जिसका वत्स बहुत सुन्दर हो, उस गाय के शरीर में जितने रोमछिद्र होते हैं, उतने वर्षों तक उस गौदान करने वाले को गौलोक में वास प्राप्त होता है, ठाकुर जी की साक्षात् सन्निधि प्राप्त होती है, ऐसा बहुत विस्तार से महाभारत में लिखा है।

गौ–संरक्षणार्थ संतों का सतत् प्रयास

गौभागवत कथा (२दिसंबर २०१७) से संग्रहीत

ईसा पूर्व पांचवी सदी तक इस भूमि पर आर्य वैदिक संस्कृति की प्रधानता रही, लोग आर्य संस्कृति में बंध कर चलते रहे, ऐसा हमारा इतिहास साक्षी है। यहाँ तक कि ३०० ई. पू. चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल तक यही स्थिति रही, इसका प्रमाण है कौटिल्य का अर्थशास्त्र, जिसमें उन्होंने इतना अधिक गौ–माहात्म्य लिखा है तथा गौपालन–गौसेवा की क्या शास्त्रीय विधि है, उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है, उस ग्रन्थ से ऐसा पता चलता है कि ई.पू.३०० तक भी भारतभूमि गौधन से अत्यधिक समृद्ध थी। दसवीं सदी तक भारत में यवनों का बहुत आतंक मचा लेकिन उस समय संत महापुरुषों की कृपा से भक्ति का प्रचुर प्रचार–प्रसार हुआ और गौवंश काफी हद तक सुरक्षित रहा। आज धर्म का जो भी अस्तित्व शेष है, हमें दिखाई पड़ रहा है, सबके मूल में संतों

की कृपा ही है। यवनों के शासनकाल में भी रामानंदाचार्यजी ने स्वयं गयासुद्दीन तुगलक से बारह शर्तें रखवायीं जिसमें उन्होंने गौवध पर विशेष रूप से प्रतिबन्ध लगवाया। नामदेवजी ने स्वयं मृत गाय को जीवित करके सिकंदर लोदी को कहकर गौवध पर प्रतिबन्ध लगवाया। स्वयं मलूकदासजी ने शाहजहाँ के द्वारा गौवध पर प्रतिबन्ध लगवाया। बाबर, हुमायू, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ के शासनकाल तक हमारा देश, हमारी भूमि गौधन से समृद्ध रही। औरंगजेब की बर्बरता ने सनातन धर्म को बहुत हद तक क्षति पहुंचाई क्योंकि उसका मुख्य उद्देश्य यही था धर्म परिवर्तन कराना, मंदिर–देवालय आदि तोड़ना किन्तु उस काल में ऐसे–ऐसे समर्थ महापुरुष हुए, आर्यमेदिनी ने ऐसे युवा वीरों को जन्म दिया– कहीं शिवाजी तो कहीं महाराणा प्रताप, जिन्होंने गौधन के लिए, गौ–संरक्षण के लिए अपने भौतिक हितों का भी बलिदान कर दिया। यहाँ तक कि १९६६ में भी गौ–संरक्षण के लिए बहुत विशाल आन्दोलन चलाया गया और स्वामी करपात्री जी ने धर्मसंघ का गठन ही गौ–संरक्षण के लिए किया था। चार महानगर कलकत्ता, मुंबई, अहमदाबाद, दिल्ली में गौ–संरक्षण हेतु विशाल यात्रा निकाली गयी। चारों महानगरों में उसका नेतृत्व स्वामी करपात्री जी महाराज ने किया लेकिन दुष्परिणाम यह हुआ कि तत्कालीन सत्ता ने इस महान गौ अभियान पर ध्यान नहीं दिया, परवाह नहीं की और यहाँ तक कि स्वामी करपात्रीजी को तिहाड़ जेल में गिरतार किया गया। तिहाड़ जेल में भी उनके ऊपर प्राण घातक हमले किये गए। ऐसा हमला हुआ कि शिवानन्द महाराज जी स्वामी करपात्री जी के शरीर पर लेट गए और उस हमले में उनकी एक आँख की रोशनी भी चली गयी। इतना बलिदान इन संतों ने किया। सन् १८५७ में जो भारत की स्वतंत्रता हेतु क्रान्ति हुई थी उसमें भारत की स्वतंत्रता मुख्य लक्ष्य नहीं था, उसमें गौवध का आक्रोश ही मुख्य था। भारतीयों के लिए भारत स्वतंत्र होने की अपेक्षा भारत गौवध के कलंक से मुक्त हो, यह मुख्य मुद्दा था। ऐसी गौभक्ति इस देश में थी। यहाँ तक कि बैरकपुर की जिस छावनी में मंगल पाण्डेय ने एक अंग्रेज अफसर की गोली मारकर हत्या की थी क्योंकि उस अंग्रेज अफसर ने भारतीय सैनिकों को गाय की चर्बी लगे कारतूस चलाने की आज्ञा दी थी, मंगल पाण्डेय ने कहा कि यह हमारे धर्म–संस्कृति के खिलाफ है, हम अपना बलिदान दे देंगे लेकिन चर्बी लगी कारतूस नहीं चलायेंगे। इसका परिणाम यह हुआ कि मंगल पाण्डेय को फांसी दे दी गयी। कितना बलिदान उन संतों–महापुरुषों ने किया। दिल्ली में करपात्री जी महाराज के संरक्षण में ऐसे–ऐसे विराट अभियान हुए संसद भवन के सामने जहाँ बीस लाख लोग गौ–संरक्षण के लिए बैठ गए थे धरना देकर, ऐसी स्थिति में भी देश की कर्णधार कही जाने वाली राजसत्ता ने गौवध पर प्रतिबन्ध लगाने की सुनवाई नहीं की। ऐसे–ऐसे कानून हमारे संविधान में बने हुए हैं– 'प्राणी क्रूरता निवारण नियम के तहत' गाय को कसाइयों के हाथ से छुड़ा लिया जाय लेकिन कसाइयों से छुड़ाने के बाद गाय को कहाँ रखा जाय, इसके लिए कोई कानून नहीं बना, हमारे देश की न्याय–व्यवस्था कितनी विलम्ब से कार्य करती है, यह तो सभी जानते हैं– जीवन निकल जाए, कितनी ही पीढ़ियाँ निकल जाएँ, मुकदमों के फैसले नहीं होते। गायों को अगर कसाई खानों से छुड़ाया भी जाय तो ऐसी स्थिति में उनको रखा कहाँ जाय, यह बड़ी समस्या की बात हो जाती है। हमारे संविधान में बहुत कुछ संशोधन की आवश्यकता है। शासन के ऊपर तो भरोसा नहीं किया जा सकता है। महात्मा विनोबा भावे ने गौरक्षा के लिए तिहत्तर (७३) दिन का आमरण अनशन किया, सरकार ने झूठे आश्वासन देकर उनके अनशन को तुड़वा दिया। सदा से ही सत्तासीन लोग झूठे आश्वासन देते रहे हैं, ऐसी स्थिति में हम सबको तन मन, धन से गौ–सेवा के लिए तत्पर होना चाहिए। श्रीजी से प्रार्थना है कि ऐसे लोग सत्तासीन हों जो इस संस्कृति के प्रति आस्थावान हों। साधु–संतों के प्रति श्रद्धा रखने वाले हों। कितनी ही बार यमुना मुक्तिकरण के लिए अभियान चलाया गया, कितनी ही बार संतजन लाखों भक्तों को लेकर दिल्ली गए लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। अब तो श्रीजी ही कृपा करें, ऐसा बुद्धि में कुछ परिवर्तन हो और हमारी ये संस्कृति, हमारी यह धरोहर, हमारी विरासत पूर्ण रूपेण संरक्षित हो।

भगवत्प्राप्ति में मूल 'गौभक्ति'

(गौभागवत (१८/११/२०१७) से संग्रहीत)

बिना गौ–चर्चा के श्रीठाकुरजी की चर्चा संभव ही नहीं है। श्रीभगवान् के अवतार तो बहुत से हुए, जैसे – अंशावतार, आवेशावतार, कलावतार किन्तु परिपूर्णावतार दो हुए – रामावतार और कृष्णावतार। जैसे ब्रह्माजी आदि अंशावतार हैं, प्रजापति

अंशांश अवतार हैं, परशुरामजी के रूप में आवेशावतार लिया, कपिल भगवान् के रूप में कलावतार धारण किया है, कलावातारों में उपदेश दिया– गौसेवा, साधु सेवा, ब्राह्मणसेवा आदि का। परिपूर्ण अवतार रामकृष्ण का है, जिसमें स्वयं गौ संरक्षण किया है और गौ–संरक्षण, गौसेवा और गौ–माहात्म्य का उपदेश भी किया है ये दोनों कार्य स्वयं भगवान् ने किये रामावतार, कृष्णावतार में और उस गौ–सेवा, गौभक्ति के कारण ही ये अवतार परिपूर्ण अवतार कहलाये हैं, इसलिए कृष्णचर्चा गौचर्चा के बिना संभव नहीं है।

"कामास्तु वांछितास्तस्य गावो गोपाश्च गोपिकाः।"

(स्कन्द पुराण माहात्म्य १/२३)

गोपाल जी को गौमाता बहुत प्रिय व अभिलषित है।

श्रीकृष्ण का जन्म होते ही कारागार में वसुदेव जी ने दस हजार पयस्वनी गाय दान का संकल्प कर लिया। नन्दबाबा ने तो लाला का जन्म सुनते ही बीस लाख गायों का दान कर दिया। वत्सों की पूंछ पकड़–पकड़ के खड़ा होना सीखे, गव्य पदार्थों के प्रति जो उनकी प्रियता है, उसके लिए चोर बनना भी स्वीकार कर लिया, चौर्य लीला, गौ–चारण लीला, दावानल पान, कालियमर्दन लीला, गोवर्धन पूजा आदि सभी लीलाओं के पीछे जो मुख्य कारण था वह गौ–संरक्षण व गौ–सेवा ही थी। ब्रज में ब्रजवासियों की गौभक्ति को और भी सुदृढ़ करने के लिए, गौ–माहात्म्य को प्रकट करने के लिए गौ–पूजन की परंपरा को चलाने के लिए गोवर्धनपूजन–लीला कराई। मथुरा गए हैं तब मैया ने लाला के अनिष्ट निवारण के लिए कि लाला को कोई अहित नहीं होय, इस भाव से गौदान किया है। जब श्यामसुन्दर द्वारिका पहुँचे हैं तो १३०८४ गायों का प्रतिदिन दान किया करते थे। तो जन्म से लेकर धामगमन पर्यन्त सभी लीलायें गाय के साथ जुड़ी हुई हैं, इसलिए गौ चर्चा से ही गोपाल चर्चा की पूर्णता है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर जी महाराज को श्रीशुकदेवजी और व्यासजी का संवाद सुनाया है, जहाँ शुकदेवजी की जिज्ञासा पर संसार की सबसे पवित्रतम वस्तु क्या है, जिसके नाम स्मरणमात्र से हृदय पवित्र हो जाये इस पर व्यास जी महाराज ने गायों का ही आग्रह किया है। गौवंश ही पवित्र को भी पवित्र बनाने वाला जीव है जिसके नाम स्मरणमात्र से हृदय सात्विकता से भरकर परम पवित्र हो जाता है। परम गौभक्त शुकदेवजी के द्वारा भागवतजी का गान हुआ, इसलिए जगह–जगह श्रीमद्भागवतजी में जितने भी आख्यान हैं, चाहे वह कपिल भगवान् का आख्यान है, चाहे वह ध्रुव जी का आख्यान है, इन सबके मूल में गौभक्ति रही है। संसार में जहाँ भी जो भी विशेषता दिखाई पड़ती है उसके मूल में गौमाता ही है, गौमाता का अनुग्रह ही है।

परम भागवत श्रीध्रुवजी महाराज को जो अल्पकाल में भगवत्प्राप्ति हुई है, उसके मूल में गौभक्ति ही प्रधान थी। पुराणान्तरों में कथा मिलती है कि ध्रुवजी का जन्म इनकी माँ की गौभक्ति के कारण ही हुआ है। पद्मपुराण में भगवान् ने स्वयं ये अपना निर्णय दिया है कि एक जन्म में अगर कोई मेरी प्राप्ति करना चाहे तो उसके लिए सर्वोत्तम है– गौसेवा, ये श्रीठाकुरजी की प्रतिज्ञा है कि एक जन्म में कोई कृष्ण–प्राप्ति के लिए गौ–सेवा करे तो उसको मेरी प्राप्ति हो ही जाती है। अब ध्रुव जी महाराज को छोटी–सी अवस्था में थोड़े–से साधन से भगवत्साक्षात्कार हो गया। ध्रुवजी के जन्म के पूर्व इनकी माँ सुनीति मैया (जो महाराज उत्तानपाद की बड़ी रानी हैं) ने 'गोवत्स द्वादशी' का व्रत किया है, ये व्रत बड़ा महत्त्वपूर्ण व्रत है। इस व्रत को करने से पापों का क्षय तो होता ही है, इससे भक्त सन्तान की प्राप्ति होती है। आज मातृ–पितृ धर्म से लोग च्युत हो रहे हैं, एक माता का क्या कर्तव्य है, पिता का क्या धर्म है, इन बातों को गंभीरतापूर्वक माता–पिता सोचते नहीं हैं जबकि ऐसी घोषणा गोसाईं जी ने कर दी है –

जननी जनै तो भक्त जनै, या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहै, क्यों खोवै निज नूर।।

स्त्री का बाँझ रहना ठीक है लेकिन सन्तान हो तो भक्त ही हो। सुनीति मैया ने भक्त सन्तान के लिए 'गौवत्स द्वादशी' का व्रत किया है बहुत समय तक। महाराज उत्तानपाद का जिस समय दूसरा विवाह हुआ सुरुचि के साथ, उस समय सुनीति को ध्रुव की प्राप्ति हो गई थी, ये बात सुनके विमाता को थोड़ा मन में कष्ट रहता था तो सुरुचि ने कई बार मारण प्रयत्न भी किये ध्रुव जी के ऊपर कि किसी तरह ये बालक मर जाये लेकिन बार–बार जब वह मारण प्रयास असफल होते रहे तो एक दिन सुरुचि ने सुनीति से जाकर पूछा– "हे देवी! ऐसा क्या सामर्थ्य तुममें और तुम्हारे बालक में है जो बार–बार प्रयत्न के बाद भी बालक का कुछ होता नहीं है।" तब सुनीति मैया ने सुरुचि को भी 'गौवत्स द्वादशी व्रत' की महिमा बताई। ये व्रत कैसे चला इसकी कथा भविष्योत्तर पुराण में प्राप्त होती है, ये स्वयं भगवान् ने इतिहास सुनाया है– सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्माजी के पुत्र श्रीभृगु जी महाराज

बड़े गौसेवी ब्राह्मण हुए हैं। एकबार शंकरजी उनकी गौसेवा की परीक्षा लेने के लिए एक ब्राह्मण के रूप में आये और भगवती को गौ रूप धारण कराया और अपने पुत्र स्कंध को एक वत्स के रूप में भृगु जी महाराज के आश्रम में ले गए। वहाँ भृगु जी से प्रार्थना की– "महाराज! थोड़े दिन के लिए मैं तीर्थयात्रा में जाना चाहता हूँ, मेरी ये सवत्सा गाय है, आप इसकी अगर थोड़े दिन देखभाल करलें, रक्षा–पोषण कर लें तो मैं थोड़े दिन के लिए तीर्थयात्रा कर आऊँ।" भृगु जी महाराज ने अनुमति दे दी और बहुत सावधानी के साथ गौमाता की सेवा करने लगे। दो चार दिन ही हुए थे, शंकर जी स्वयं एक सिंह का रूप धारण करके भृगुजी महाराज के आश्रम में आये और एकाएक गाय पर आक्रमण कर दिया। अब भृगुजी महाराज चिंतित हुए, ब्रह्माजी महाराज ने एक घंटा दे रखा था कि कभी जीवन में कोई आपदा–विपदा पड़े तो इस घंटे को बजाकर ध्वनि कर देना तो तुम्हारी रक्षा हो जायेगी। भृगुजी महाराज ने जोर–जोर से उस घंटे का नाद किया कि किसी तरह गाय की रक्षा हो, जैसे ही घंटे का नाद किया तो उसी समय शंकरजी अपना सिंह रूप त्याग के अपने सही स्वरूप में वहाँ प्रकट हो गए। भगवती भी अपने रूप में प्रकट हो गईं, स्कन्ध भी अपने रूप में प्रकट हो गए। शंकरजी ने भृगुजी महाराज को प्रणाम करते हुए कहा– "महाराज! हे महर्षे! आपकी गौ–सेवा की परीक्षा करने के लिए ही हमने ये लीला की और आप गौभक्ति में सफल हो गए। आपने गाय की वत्स सहित रक्षा की है, इसलिए आज के दिन इस व्रत को करने वाला भक्त सन्तान से युक्त होगा, उसके सभी पापों का प्रायश्चित सहज में ही हो जायेगा।" तो वह अवसर कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की द्वादशी थी, जिसे गौवत्स द्वादशी तिथि कहा गया, उस गौवत्स द्वादशी का व्रत ही सुनीति मैया ने किया है और उसी व्रत को करने का प्रभाव यह रहा कि ध्रुवजी जैसे परम भागवत पुत्र की उनको प्राप्ति हुई और बड़े–बड़े संकटों को ध्रुवजी ने पार किया है, थोड़े–से समय में भगवत्प्राप्ति की, इसके मूल में सुनीति मैया की गौभक्ति ही थी।

धरा में धारण–शक्ति का आधार 'गौवंश'

जिस समय सम्पूर्ण पृथ्वी ने अन्न छिपा लिया। सारी प्रजा भूख से त्राहि–त्राहि करने लगी। प्रजाजनों ने पृथु महाराज की शरण ली। उस समय जब पृथु महाराज ने पृथ्वी का पीछा किया तो पृथ्वी ने गौरूप धारण कर लिया। 'गौ' शब्द के बहुत से अर्थ होते हैं। गौ–अर्थात् इन्द्रियाँ, गौ अर्थात् एकरूप में पृथ्वी के रूप में गौमाता, जीव जगतमात्र को धारण भी करती हैं, धारिका शक्ति भी हैं। उस समय पृथ्वी ने गौ रूप धारण किया। प्राचीनकाल में भारत के शासकों में गौसेवा का कैसा दिव्य भाव था!! जब पृथ्वी ने गौरूप धारण कर लिया तो पृथु महाराज ने उसी समय अपना धनुष नीचे कर लिया। पृथु महाराज की बात तो बहुत पुरानी है, महाराज पृथ्वीराज जिस समय शासक के रूप में दिल्ली में विराज रहे थे तो उन्हीं के मंत्री जयचन्द ने उनके साथ बड़ा विश्वासघात किया, मुहम्मदगोरी को पृथ्वीराज के ऊपर आक्रमण करने की प्रेरणा जयचन्द ने ही दी थी और ११ बार मुहम्मदगोरी पृथ्वीराज से पराजित हुआ। मुहम्मदगोरी को यह समझ में आ गया कि पृथ्वीराज से जीतना हमारे सामर्थ्य के बाहर की बात है, ११ बार हार गये, अब बार–बार हारना बहुत बेइज्जती की बात है, बार–बार हारने से परिणाम क्या निकलना है। जयचन्द पृथ्वीराजजी की गौभक्ति से बड़ा परिचित था, उसने मुहम्मदगोरी को फिर से पृथ्वीराज के विरुद्ध हमला करने के लिये उकसाया और कहा कि अबकी बार आपको ऐसी युक्ति बताऊँगा कि आप पृथ्वीराज के सामने होंगे फिर भी वह आपके ऊपर शस्त्र नहीं उठायेगा। जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज गौभक्त हैं, अबकी बार जब आप उससे युद्ध करने जाना तो सेना के आगे गौवंश को रखना। गाय को देखकर पृथ्वीराज आपके ऊपर शस्त्र नहीं उठायेंगे, फिर आप उसे कैद कर लेना और जो मन में आये करना। १२ वीं बार मुहम्मदगोरी १२०० गायों को साथ लेकर युद्ध करने गया तो उसकी सेना के आगे–आगे गायें चल रहीं थी। युद्ध आरम्भ हुआ तो सामने अपनी आराध्या गौमाता को देखकर दिल्लीश्वर पृथ्वीराज ने शस्त्र धारण नहीं किया। मर भले ही जाऊँ किन्तु आराध्या गौमाता सामने खड़ी है तो शस्त्र कैसे उठाऊँ। पृथ्वीराज ने अपने प्राणों की परवाह नहीं की। उस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि गायों को सामने देखकर पृथ्वीराज युद्ध नहीं कर सके और गोरी ने उन्हें कैदकर

कारावास में डाल दिया और उनके साथ बहुत दुर्व्यवहार किया। किन्तु इस घटना से पता चलता है कि उस समय के शासकों में कितनी गौभक्ति थी। प्राण त्याग कर सकते थे, लेकिन गौवंश सामने आ जाये तो शस्त्र नहीं धारण कर सकते थे। कितना आराध्य भाव था गौमाता के प्रति और यही कारण था कि उस काल में भारत की समृद्धि को दूसरे देश नहीं पा सके। भारत की समृद्धि में दो ही चीजें प्रधान थी। जिस समय ब्रिटिश शासन भारत में आया तो उन लोगों ने विश्लेषण किया कि आखिर भारत की समृद्धि का कारण क्या है ? तब दो चीजें ही पायी गयीं – एक कृषि परम्परा और दूसरी ऋषि परम्परा। ब्रिटिश शासन में इन दोनों ही परम्पराओं को भारत से जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया गया। १८ वीं सदी तक भारत के साढ़े सात लाख गाँव थे जिनमें दो ब्रिटिश शासक हुए। उन्होंने उस समय खोज की कि साढ़े सात लाख गाँवों में सात लाख बत्तीस हजार गाँवों में गुरुकुल की व्यवस्था थी। उनमें निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। ९७ प्रतिशत उत्तर भारत साक्षर था और शत–प्रतिशत दक्षिण भारत साक्षर था। देश में कोई अनपढ़ नहीं था उस समय। इन दो ही चीजों को जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया गया और १८ वीं सदी में, सम्भवतया १८५७ में मुम्बई में देश का सबसे पहला कॉनवेन्ट स्कूल खोला गया, जिसकी स्थापना मैकाले ने की थी। उसने अपने पिता को एक पत्र में लिखा था कि अब भारत में ऐसे–ऐसे विद्यालय खोले जा रहे हैं, जिनमें पढ़ने वाले बच्चे भले ही शरीर से भारतीय हों लेकिन उनकी मानसिकता में भारतीयता, हिन्दुत्व, गौ–विप्र के प्रति आस्था नहीं रहेगी और आज उसका दुष्परिणाम हम सब लोग देख रहे हैं। उन दुष्परिणामों में आधुनिक काल के भारतीय बच्चे जी रहे हैं। दोनों चीजों को अंग्रेजों ने नष्ट करने का प्रयास किया और दोनों चीजों का मूल थी– गौमाता। चाहे वह ऋषि परम्परा हो, चाहे कृषि परम्परा हो, ब्राह्मण में मंत्र प्रतिष्ठित है और गाय में हव्य प्रतिष्ठित है– दोनों में बस इतना ही अन्तर है। बिना ब्राह्मण के वेद–धर्म लुप्त हो जायेगा और बिना गाय के विप्रधर्म लुप्त हो जायेगा। ऋषि और कृषि– ये दो ही भारतीय संस्कृति के मूल हैं और दोनों का मूल गोवंश है। स्कन्द पुराण में लिखा है–

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही।।

(स्कन्दपुराण ०४/०२/९०)

सात जो पृथ्वी को धारण करने वाले स्तम्भ हैं, उनमें पहला स्तम्भ गौवंश है, सबका मूल गौवंश है। गाय नहीं होगी तो क्या ब्राह्मण, ब्राह्मण धर्म चला पायेंगे, क्या वैदिक धर्म चल सकेंगे, सम्भव ही नहीं है। गाय नहीं रही तो विप्र नहीं रहे। आज गाय का ह्रास हो रहा है, उसका दुष्परिणाम यह है कि विप्र विप्रत्व से नष्ट हो रहे हैं। कहाँ वह सदाचार रह गया, कहाँ वैसा वेदों का अध्ययन रह गया, कहाँ वैसा कर्मकाण्ड रह गया, कहाँ वैसा संध्या–वन्दन रह गया, कहाँ वैसी गायत्री के प्रति आस्था रह गयी, कहाँ यज्ञोपवीत और शिखा रखने की प्रथायें दिखायी पड़ती हैं। गौवंश का उन्मूलन हुआ तो उसमें विप्रों का भी उन्मूलन हुआ, विप्र नष्ट हो गये। तीसरी सीढ़ी है– वेद, ब्राह्मण नहीं रहेंगे तो वेदों का क्या अस्तित्व रहेगा ? वैदिक परम्पराओं को चलाने वाला कौन रहेगा और वेद नहीं रहे तो सदाचार सिखाने वाले ग्रन्थ नहीं रहेंगे फिर सती साध्वी स्त्रियों की कल्पना भारत वर्ष में कैसे की जा सकती है। सदाचारिणी सती स्त्रियाँ नहीं रहेंगी तो निर्लोभी पुरुष, दाता पुरुष, सत्यवादी पुरुषों को जन्म देने की क्षमता नारी शक्ति को कैसे मिलेगी, अगर जीवन से सदाचार ही चला गया, पूर्वकाल में माताओं के जीवन में सदाचार था, जैसे– सुनीति मैया की आराधना ही तो ध्रुव जी के भक्त होने के मूल में थी। शिवाजी की माँ की आराधना ही तो शिवाजी के शिवाजी बनने के मूल में थी। सदाचार सिखाने वाले ग्रन्थ नहीं रहे तो सदाचारिणी स्त्रियाँ कहाँ से रहेंगी और सदाचारिणी स्त्रियाँ नहीं रहीं तो सत्यसन्ध पुरुष, अलुब्ध पुरुष और दाता पुरुष जन्म कहाँ से लेंगे। एक गौवंश के ह्रास से सम्पूर्ण सात आधार स्तम्भ नष्ट हो जायेंगे और ऐसी स्थिति में क्या हम सुखी भारत की, समृद्ध भारत की कल्पना भी कर सकते हैं। वैज्ञानिकों के द्वारा बहुत बड़ी खोज हुई, आज प्रकृति असंतुलित हो रही है, उसके मूल में तीन तरंगे भूमि से निकलती हैं। पहली तरंग तीव्र होती है, द्वितीय तरंग धीमी होती है और तीसरी तरंग उससे से भी धीमी होती है। ये तीनों तरंगें तब उठती हैं जब गाय और ब्राह्मण पर अत्याचार हो तथा वे करुण क्रन्दन करें, रोयें आर्तभाव से, उस स्थिति में ये तीनों तरंगें एक ऊर्जा संकलित करती हैं और वही ऊर्जा जब विस्फोटक हो जाती है, विस्फोट करती हैं तो प्रकृति हिलती है, जिसे हम लोग भूकम्प कहते हैं। भूकम्प गौवंश के ह्रास की सूचना है। गौवंश नष्ट हो रहा है, इसलिए पृथ्वी असंतुलित हो रही है। सारी प्रकृति असंतुलित हो रही है। कोई समय

था जब भारत की भूमि अकृष्टपच्या होती थी, भूमि को जोतने–बोने की जरूरत नहीं पड़ती थी। अकृष्टपच्या भूमि हिरण्यकशिपु के काल में थी। इस भूमि का ऐसा नाश हिरण्यकशिपु भी नहीं कर पाया, जैसा हम लोगों ने किया है। भागवत में वर्णन है कि हिरण्यकशिपु के काल में भूमि को जोतना–बोना नहीं पड़ता था, अपने आप भूमि रत्नगर्भा थी, अपने आप फसल पैदा होती थी। अब और एक समय वह भी बहुत जल्दी आने वाला है, जिसकी भविष्यवाणी गोस्वामी तुलसीदास जी ने बहुत पहले कर दी है। **कलि बारहिं बार दुकाल परै। बिनु अन्न दुखी सब लोग मरैं।।** दाने–दाने के लिये जनता तरसेगी। कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि, कहीं ओलावृष्टि ये सब क्या है, ये अकाल के ही तो स्वरूप हैं, अकाल के ही दूसरे स्वरूप हैं। कहीं बहुत अधिक वर्षा हो रही है, कहीं वर्षा ही नहीं हो रही है। **बिनु अन्न दुखी सब लोग मरैं**– जनता मरेगी। पृथुजी के समय पृथ्वी ने जब अन्न छिपाया तो पृथु जी महाराज धनुष उठाकर उसके पीछे दौड़ पड़े तब पृथ्वी ने गौरूप धारण कर लिया। पृथ्वी ने कहा– महाराज! मैं तब–तब अन्न रूपी दूध को छिपा लेती हूँ, जब–जब मेरे अन्न का भक्षण करने वाले सदाचार से रहित हो जाते हैं, भ्रष्ट हो जाते हैं, दुराचारी हो जाते हैं, पापाचारी–अनाचारी हो जाते हैं। फिर मैं अन्न रूपी दूध को इन दुष्टात्माओं के पोषण के लिए प्रकट नहीं कर सकती हूँ, छिपा लेती हूँ। इसलिए अन्न रूपी दूध को छिपाकर गौरूपी पृथ्वी माता भागी थी। यह बहुत गम्भीरता पूर्वक, सोचने योग्य, विचार करने योग्य बात है।

गौव्रतपरायण गोपालजी

(गौभागवत कथा (३०/११/२०१७) से संगृहीत)

गोपालजी की लीला, बिना गौचर्चा के सम्भव ही नहीं है क्योंकि स्कन्दपुराण का बड़ा महत्वपूर्ण यह वाक्य है–

कामास्तु वाञ्छितास्तस्य गावो गोपाश्च गोपिकाः।

ब्रज में आने का एकमात्र महत्वपूर्ण कारण यही है। श्रीठाकुरजी चाहते हैं कि मैं गायों से घिरा रहूँ, गायों के रक्षण व पालन–पोषण करने वाले ग्वारिया–गोपों से घिरा रहूँ व गायों की सेवा करने वाली गौसेविका गोपियों से घिरा रहूँ। यही गोपालजी के अवतरण का मुख्य उद्देश्य था और यही इच्छा ब्रजभूमि में आने से पूर्ण हुई। इसलिए श्यामसुंदर आप्तकाम भी बन गये, 'आप्तकाम' अर्थात् अब जिसको कोई कामना नहीं रह गई। गायों को पाकर, गोप–गोपियों को प्राप्तकर श्यामसुंदर आप्तकाम हो गए। आप्तकाम बनाने वाली यही ब्रजभूमि है, यहीं वह रस, यहीं वह सेवा का सौभाग्य, यहीं ग्वारिया बनने का सौभाग्य, यहीं गोपाल कहलाने का सौभाग्य श्यामसुंदर को मिला। गह्वरवन के निकट दोहनीकुण्ड पर राधारानी और श्यामसुंदर गोदोहन किया करते थे। श्यामसुंदर के मन से गौमाता का प्रादुर्भाव हुआ। श्रीठाकुरजी के अन्तःकरण से गौमाता प्रकट हुई है। सृष्टि में अगर भगवान् की करुणा का साक्षात् स्वरूप देखना हो तो वह गौमाता है। करुणा हृदय का धर्म है, करुणा हृदय में होती है, उसी श्यामसुंदर के अन्तःकरण से गौमाता, वृषभ की उत्पत्ति हुई है। अखिल गौवंश ठाकुरजी के मन से ही प्रकट हुआ है। इसलिए सम्पूर्ण करुणाशक्ति को, सम्पूर्ण वात्सल्य, कृपा, दया, अनुग्रह को भगवान् ने कहीं साकार रूप में उपस्थित किया है तो वह गौवंश है, गौमाता है। राधारानी के मन में अभिलाषा हुई कि ऐसी कोई स्थली प्रकट हो, जहाँ एकान्तिक लीला की जा सके, जहाँ गौचरण लीला हो सके, जिस लीला भूमि को पाकर गौमाता प्रसन्न हो सके तो उन्होंने श्यामसुंदर से इच्छा व्यक्त की। श्यामसुंदर ने अपने वक्षःस्थल की ओर देखा, उसी समय उनके वक्षःस्थल से एक तो तेजपुंज प्रकट हुआ जो सामने भूमि पर गिरा और वही तेजपुंज देखते–देखते पर्वताकार हो गया और वही पर्वत श्रीगिरिराजजी गोवर्धन हुए। दो चीजें गोपालजी के हृदय से प्रकट हुयीं– एक गौमाता और दूसरे गौवंश को बढ़ाने वाले श्रीगिरिराज गोवर्धन। भगवान् की करुणा या प्रेम का जो घनीभूत स्वरूप है वह श्रीगिरिराजजी और उनकी करुणा का साकार स्वरूप हैं– श्रीगौमाता। पृथ्वी को बोझिल होते देखकर श्यामसुन्दर ने श्रीजी से प्रार्थना की– आप चलें, मृत्युलोक में लीला करें। तब श्रीजी ने बहुत प्रसिद्ध वाक्य कहा–

यत्र वृन्दावनं नास्ति यत्र नो यमुना नदी।
यत्र गोवर्धनो नास्ति तत्र मे न मनः सुखम्।।

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड ३/३२)

जहाँ श्रीवृन्दावन नहीं है, वृन्दावन से तात्पर्य गौचारण भूमि नहीं है। सम्पूर्ण ब्रज क्या है ? १३७ वनों के समष्टि स्वरूप को ब्रज कहा गया है। सारा ब्रज वन के ही रूप में तो था। १३७ वन ब्रजभूमि में थे। वृन्दावन, जिसके अन्तर्गत बहुत से उपवन आ जाएँ, वह क्षेत्र वृन्दावन नाम से प्रसिद्ध

हुआ। अतः श्रीजी ने कहा– जहाँ वृन्दावन नहीं है, वृन्दावन से तात्पर्य जहाँ गोचर भूमि नहीं है, जहाँ श्रीयमुनाजी नहीं हैं अर्थात् गायों के पीने योग्य अमृततुल्य जल नहीं है, और जहाँ गायों का वर्धन करने वाले श्रीगिरिराज गोवर्धन नहीं हैं, वहाँ मेरे मन को सुख नहीं मिल सकता। तब सम्पूर्ण ८४ कोस ब्रजमंडल को, जो ब्रजभूमि साक्षात् भगवान् के ही अंग से उत्पन्न हुई है, उस भूमि को, उस नित्य गोलोक को मृत्युलोक में भगवान् ने ब्रजभूमि के रूप में भेजा। श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव में २० लाख गायों का दान नंदबाबा ने किया। इतनी ज्यादा गाय दान की हैं, अतः नंदबाबा के पास बहुत अधिक गौधन था। गर्गसंहिता में लिखा है कि ये सब पदवियाँ भी गौधन और गौ–समृद्धि के अनुसार ही मिलती थीं। पाँच लाख गौधन जिसके पास हो, उसको उपनन्द की पदवी प्राप्त होती थी। जिसके पास नौ लाख गायें हों, उसको नंद की पदवी प्राप्त होती थी। जिसके पास दस लाख गायें हों, उसे वृषभानु की पदवी प्राप्त होती थी। जिसके पास पचास लाख गायें हों, वह वृषभानुवर्य की पदवी प्राप्त करता था। जिसके पास एक करोड़ गायें हों, वह नंदराज की पदवी प्राप्त करता था। अकेले नन्दबाबा ही नंदराज थे, हालांकि पूर्व में नंदराज वृषभानु बाबा थे क्योंकि वृषभानु जी ब्रज के राजा थे, वृषभानु जी के पिता महीभान नंदराज थे, इसके बाद नन्दराज की पदवी नन्दबाबा को दी गयी प्रेम की अधिकता के कारण। नंदबाबा के पास एक करोड़ गायें थीं। नौ लाख गायें रखने वाले को नन्द और एक करोड़ गायें रखने वाले को नंदराज की पदवी मिलती थी। कन्हैया के जन्म पर बीस लाख गायों का तो नन्दबाबा ने दान ही कर दिया, इसके अतिरिक्त पूतना वध के पश्चात् गोदान किया, शकटासुर वध के उपरान्त और तृणावर्त वध के बाद भी गौदान किया। कैसा भी कोई अनिष्ट होता दिखायी पड़ता तो नन्दबाबा खुले दिल से ब्राह्मणों और ऋषि–महर्षियों को गौदान किया करते थे। महाभारत में गौदान की बहुत सुन्दर प्रक्रिया बतायी गयी है – जो गौसेवा नहीं करता, उसको गौदान करने का अधिकार नहीं है। आजकल लोग एक भी गाय की सेवा नहीं करते और गौदान करने लग जाते हैं, ऐसा गौदान लाभ नहीं देगा। महाभारत में लिखा है कि जो आदमी १० गायों की सेवा करता है, उसे एक गाय दान करने का अधिकार है। जो सौ गायों की सेवा करता है, उसे दस गायों को दान करने का अधिकार है। जो एक हजार गायों की सेवा करता है, उसे सौ गायों को दान करने का अधिकार है। अरे ! यदि आप दस गाय की सेवा नहीं कर सकते तो कम से कम एक गाय की सेवा करने का व्रत तो जीवन में अवश्य होना चाहिए, जिससे गौदान करने का अधिकार तो मिले। जो गौसेवी नहीं है, उसे गौदान करने का अधिकार नहीं है। गौसेवी को ही गौदान का अधिकार है। यदि किसी कारण से घर में गाय नहीं रख सकते, गौसेवा नहीं कर सकते किन्तु जहाँ समर्पित भाव से गौसेवा हो रही है, वहाँ पर मानसिक, शारीरिक या आर्थिक रूप से यथा सामर्थ्य गौवंश की सेवा अवश्य करनी चाहिए। कम से कम एक गाय की सेवा हर परिवार को अवश्य करनी चाहिए अपना दायित्व समझ करके, कर्तव्य समझ के और जब तक यह कर्तव्यपालन भारतवर्ष में रहा तब तक गौवंश की दुर्दशा नहीं हुई। आज गौ–ग्रास देने की परम्परा लुप्त होती जा रही है। जब गायें हैं ही नहीं तो गौग्रास किसको देंगे।

महाभारत में बहुत सुन्दर गौदान की विधि लिखी है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर जी को यह विधि बतायी है, जिस समय युधिष्ठिर जी ने जिज्ञासा की तो उस समय भीष्म पितामह ने जब महाराज मान्धाता ने गौदान किया है तो ब्रहस्पति जी से जो गौदान की विधि सुनी है, वह भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर जी को सुनायी। गौदान होता है लेकिन शास्त्रीय विधि से नहीं होता है। गौदान करने वाले को इसकी विधि का ज्ञान होना चाहिए। सबसे पहले गौदान करने वाला एक दिन उपवास करे और गौदान करते समय ऐसी प्रार्थना करे – हे गौमाता! आप ही मेरी माँ हैं, हे वृषभ! आप ही मेरे पिता हैं, आप मुझे ऐहिक–आमुष्मिक सुख प्रदान करें। आप ही मेरा आश्रय हैं, आप ही मेरा आधार हैं और गोदान करने के पूर्व रात्रि में मौन रखें। गौदान करते समय मौन खोलें, गौमाता की स्तुति करें, सत्पात्र ब्राह्मणों को बुलावें। जिस दिन गौदान करें, उस दिन एक रात गाय के साथ निवास करें। आजकल गौदान करना भी एक औपचारिकता मात्र रह गया है। गौदान करना भावनाओं का कार्य है। गौदान की विधि है– एक रात्रि गौमाता के साथ निवास करे, सूर्योदय होने के पश्चात् सत्पात्र ब्राह्मण को गौदान करें, आशीर्वाद प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें और गाय के प्रति भाव रखें क्योंकि जो वस्तु दान में दी जाती है, वह कई गुना बढ़कर मिलती है। गौमाता से प्रार्थना करें– हे गौमाता! मैं आपको इस भाव से दे रहा हूँ कि बार–बार मुझे आपकी सेवा का सौभाग्य मिलता रहे। इस भाव से गौदान

करना चाहिए क्योंकि गाय सच्चिदानन्द स्वरूपिणी है। भू–शक्ति होने से गाय के अन्दर सत्य होता है, सूर्य का अंश होने से गाय के अन्दर चित्शक्ति होती है, चन्द्रमा का अंश होने के कारण गाय के अन्दर आनन्दशक्ति होती है, इसलिये गाय ही सच्चिदानंद स्वरूपिणी है। जैसे भगवान को सच्चिदानंद स्वरूप कहा गया है, वैसे ही गाय को भी सच्चिदानंद स्वरूप कहा गया है। गौमाता से प्रार्थना करें– "हे गौमाता! जो तुम्हारा स्वरूप है, वही मेरा भी स्वरूप है। मैं ब्राह्मण को आपका दान करके अपने आपका दान कर रहा हूँ, गौमाता का दान नहीं, मैं स्वयं को ब्राह्मण के आधीन कर रहा हूँ, साधुओं के आधीन कर रहा हूँ।" इसलिये सत्पात्र को ही गौदान करने का अधिकार है, सबको नहीं, सबके आधीन नहीं होना चाहिए। साधु हैं, ब्राह्मण हैं, निष्काम संत हैं, उनको दान करना चाहिए। ऐसा भी लिखा है कि अगर किसी परिस्थिति वश साक्षात् गाय नहीं है तो गाय का निष्क्रिय रूप बनाकर, अन्न की गाय बनाकर, गोमय (गोबर) की गाय बनाकर या स्वर्ण की गाय बनाकर दान देने से भी उतना ही लाभ मिलता है जितना कि साक्षात् गौदान करने का फल मिलता है। गाय का दान करने के बाद तीन रात्रि तक मनुष्य को गौव्रत का पालन करना चाहिए। तीन रात तक गोबर, गौमूत्र और गौदुग्ध का आहार करना चाहिए। यह तीन रात्रि पर्यन्त गौव्रत है और साथ में यह भी कहा गया कि सीधी–सादी गौमाता को दान देने वाला उस गाय के शरीर में जितने रोमछिद्र होते हैं, उतने वर्षों तक उस मनुष्य को गोलोक धाम में वास प्राप्त होता है।

इस देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है, शासन व्यवस्था के द्वारा राष्ट्र का कितना बड़ा अहित हो रहा है, जिस गौवंश में वृषभ को अनुपयोगी कहकर शासक मारने का समर्थन करता है। लेकिन महाभारत में ऐसा लिखा है कि जो जवान बलिष्ठ वृषभ का दान करता है, वह गौदान से भी अधिक फल प्राप्त करता है। गौदान की अपेक्षा वृषभदान का अधिक महत्त्व है क्योंकि वृषभ साक्षात् धर्म का स्वरूप है। जबकि संसार में वृषभदान करने जाओ तो उसे कोई नहीं लेगा जबकि बलिष्ठ वृषभ का दान गौदान की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण कहा गया है। देवराज इन्द्र को ब्रह्माजी ने बड़ी सुन्दर महिमा सुनाई है। गौदान करने वाला देवराज इन्द्र से भी ऊपर जब स्वर्गादि लोकों का अतिक्रमण करके उच्चलोकों को प्राप्त करता है तब इन्द्र भी चकित होते हैं कि ऐसा इसने कौन–सा पुण्य किया है जो स्वर्गादि लोकों का अतिक्रमण करके जा रहा है। तब ब्रह्मा जी कहते हैं– "देवराज! तुम्हारे अन्दर विषय प्रधानता होने से रजोगुण प्रधान है इसलिये परम सात्विक शक्ति श्रीगौमाता के दान का फल आप समझ नहीं पायेंगे।" स्वर्गादि तो बहुत तुच्छ है, गौदान करने वालों को तो ठाकुरजी के नित्य धाम की प्राप्ति होती है। देवता भी रजोगुण प्रधान होने से गौ–माहात्म्य को नहीं समझ सकते। हम लोगों के हृदय में राजस–तामस बढ़ गया है इसीलिए शास्त्रों में गौ–माहात्म्य के बारे में इतना सब कुछ लिखे जाने के बावजूद भी लेशमात्र भी सेव्यभाव हमारे हृदय में गौमाता के प्रति नहीं होता। गौ माहात्म्य जानने वाले को क्या लाभ होता है, इसकी कल्पना भी तुम नहीं कर पाओगे। ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का पालन करने वाले और सदाचारी एकपत्नी व्रती पुरुष और पतिव्रता स्त्रियाँ, सदाचारिणी स्त्रियाँ, सात्विक अन्तःकरण प्रधान पुरुष ही गौ–माहात्म्य को समझ सकते हैं। गौ–महिमा को समझने के लिए अंतःकरण में पवित्रता चाहिए, मन में पवित्रता चाहिए, नहीं तो गौ–महिमा समझ में नहीं आएगी और महिमा समझ में नहीं आती है, यही हमलोगों के गौवध के दोषी होने का मूल कारण है। गौ–माहात्म्य समझ में आ जाए तो सड़कों में, गलियों में, बूचड़खानों में गायें दिखाई नहीं पड़ेगीं। लेकिन हमलोगों की लोलुप वृत्ति इतनी बढ़ गयी है कि गौ–महिमा को धारण करने की शक्ति भी अंतःकरण में नहीं रह गई है।

भीष्मपितामह ने महाभारत में यहाँ तक कहा है कि जो मनुष्य भटकती हुई गाय को जंगल से निकाल के अपने घर में बढ़िया तरह से उसकी सेवा करे तो एक ही क्षण में सभी पापों से मुक्त होकर अश्वमेधादि यज्ञों के फल को प्राप्त कर लेता है।

लाला के जन्म–बधाई में नन्दबाबा ने बीस लाख गायें ब्राह्मणों को दान में दी, जिनमें से वेदपाठी ब्राह्मणों को तो वे गायें दी जो बढ़िया स्वर्णिम आभूषणों से समलंकृत थीं, बढ़िया सजाई गईं थीं। गोपाल ब्रज में आ जायें और गायें न आयें, ऐसा तो संभव ही नहीं है।

शुकदेव जी ने वर्णन किया है –

गावो वृषा वत्सतरा हरिद्रातैलरूषिताः।

(श्रीमद्भागवत १०/५/७)

गायों को सुन्दर–सुन्दर धातुओं से सजाया गया, बढ़िया झूल धारण कराई गई, मुक्तामाल धारण कराई गई, सुन्दर

श्रृंगों पर मुक्तामाल लटकाई गई, इस तरह वत्सों के साथ गायों को सजाकर नन्दभवन में लाया गया। सब गोपियों ने नन्द के लाला को खूब आशीर्वाद दिया– "लाला जुग–जुग जिए, दीर्घायु प्राप्त करे, बढ़िया गैयाओं का पालक बने, गौ–संरक्षण करे, गौ–सेवा करे।" इस तरह से ब्रजगोपियाँ श्यामसुन्दर को आशीर्वचन दे रही हैं। गोपियाँ जो स्वयं गायों की सेविका हैं, वे भी चाहती हैं कि लाला गायों का सेवक बने, बढ़िया गौ–भक्त बने।

गोपियों ने श्यामसुंदर को गौभक्त होने का खूब आशीर्वाद देते हुए मंगलगान किया। दही के बड़े–बड़े सरोवर जिनमें हल्दी मिलाई गयी थी, उन सरोवरों में गोपी–ग्वाल एक–दूसरे को पटक रहे हैं, उठ रहे हैं फिर गिर रहे हैं और नृत्य–गान के साथ नन्दभवन में बहुत बड़ा उत्सव मनाया गया।

तत् आरम्भ नन्दस्य व्रजः सर्वसमृद्धिमान्।
हरेर्निवासात्मगुणै रमाक्रीडमभून्नृप।।

(भागवत १०/५/१८)

सारा ब्रज समृद्धि से पूर्ण हो गया। वह समृद्धि क्या है, वह गौधन ही तो समृद्धि है, सारा ब्रज समृद्धि से भर गया। गोपालजी ने ब्रज में जितनी भी लीलायें कीं, वे गाय के बिना तो संभव ही नहीं हैं। जब पूतना के प्राण हर लिए तो राक्षसों के शरीर के स्पर्श होने के कारण गोपियों ने यशोदा जी से कहा कि लाला का शरीर अशुद्ध हो गया है अतः इसकी शुद्धि के लिए –

गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।

(भागवत १०/६/२०)

सब गोपियां यशोदा जी के गोष्ठ में गयीं और वहाँ जाकर गोपालजी को गोमूत्र में स्नान कराया, गोरज का लेपन किया, गाय की पूँछ से झाड़ा दिया। आज गोपाल जी बडे प्रसन्न हैं, सोच रहे हैं कि ब्रज में जन्म लिये छः दिन हो गए किन्तु आज ही कृतार्थ हुए क्योंकि आज गौ–दर्शन हुआ, आज मेरे शरीर पर गौरज का लेपन हुआ, आज गाय का स्पर्श प्राप्त हुआ, इसलिये अपने आप को कृतार्थ मान रहे हैं, बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। गोपालजी को गोबर का लेप कराकर गोमूत्र से स्नान कराया जा रहा है तो वह बहुत हँस रहे हैं, खिलखिला रहे हैं।

परन्तु दुर्भाग्य है कि संसार में ऐसे भी बहुत से लोग हैं जिन्हें गोबर और गोमूत्र से दुर्गन्ध की अनुभूति होती है, जो इसे छू नहीं सकते, देख नहीं सकते जबकि ठाकुरजी तो गोबर और गोमूत्र द्वारा स्नान कराये जाने पर अत्यधिक प्रसन्न हुए। प्राचीनकाल में भारतवर्ष में सभी बालक गुरुकुल में अध्ययन के लिए जाया करते थे, वहाँ गुरुजनों के आश्रय में रहते थे तो उन्हें गुरुजनों द्वारा गौसेवा का माहात्म्य पढ़ाया जाता था। बाल्यकाल से बच्चों के मस्तिष्क में ऐसी गौभक्ति भर दी जाती थी कि फिर उसी गौभक्ति के प्रभाव से वही बालक आगे वेदज्ञ होकर या व्यापारी होकर या राजा होकर या पुरोहित होकर सुन्दर गौभक्ति का प्रचार करते थे। राजा व व्यापारी भी गौभक्ति से शून्य नहीं होते थे। गुरुकुल में ही शिक्षा–पद्धति इस प्रकार की थी, वहीं पर उनके मस्तिष्क में गौभक्ति के संस्कार कूट–कूट कर भर दिए जाते थे। अब तो गुरुकुल परंपरा ही समाप्त हो गयी, अब माँ–बाप स्वयं ही गौशाला नहीं जाते तो बच्चों को तो गोबर–गोमूत्र से घृणा होगी ही, उसमें से दुर्गन्ध लगेगी ही। माँ–बाप को स्वयं गौशाला में जाना चाहिए अपनी संतान को साथ लेकर, तब उनमें गौभक्ति के संस्कार पड़ेंगे और जब माँ–बाप को स्वयं गोबर–गोमूत्र से घृणा है, दुर्गन्ध महसूस होती है तो उनकी संतान क्या सीखेगी। प्राचीनकाल में उत्तंक नामक ब्रह्मचारी को केवल गोमय (गोबर) और गोमूत्र का आहार करने मात्र से ही भगवान् श्रीकृष्ण के विराट स्वरूप का दर्शन हो गया।

हमारे गोपाल जी से बढ़कर उत्तम भक्त कौन हो सकता है ? कोई असुर आता था तो गोपी–ग्वालों के मन में ऐसी प्रेरणा कर देते थे कि गोपियाँ लाला को सीधे खिरक में ले जाकर गोबर का लेप लगाकर गोमूत्र से स्नान करातीं थीं। महाभारत में लिखा है कि गोमूत्र से स्नान करने वाला और गाय के गोबर से यव बीनकर खाने वाला मनुष्य सभी पापों का शमन करके अत्यंत शुद्ध हो जाता है। गौव्रत किसे कहते है ? एक महीने तक गोष्ठ में गैयाओं के साथ निवास करे, गाय जब उठे तो उठे, गाय जब बैठे तो बैठे, गाय जब खाये तब खाये, गाय जब पानी पियें, तब ही पियें, ऐसा गौव्रत ठाकुर जी ने आजन्म निभाया ब्रज मे

गौ–पालन से प्रेमाभक्ति का परिपोषण

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गौ–महिमा' (१०/०६/२०१२) से संग्रहीत

गाय के लिए गोपाल का अवतार होता है और असुरों का जन्म गोवंश के नाश के लिए होता है। जैसे परीक्षित दिग्विजय करने गए तो उन्होंने देखा कि एक वृषभ जिसके

तीन पैर टूट चुके हैं, उसे राजा का वेष धारण करके एक शूद्र पीट रहा है। वह वृषभ धर्म था।

तपः शौचं दया सत्यमिति पादाः कृते कृताः।
अधर्मांशैस्त्रयो भग्नाः स्मयसङ्गमदैस्तव।।

(श्रीमद्भागवत १/१७/२४)

धर्म के चार चरण हैं –तपस्या पहला चरण है, अन्तःकरण और बाहर की पवित्रता दूसरा चरण है, दया तीसरा चरण है, सत्य चौथा चरण है। इन चार चरणों में तीन चरण तो टूट चुके हैं। धर्म एक चरण से चल रहा है क्योंकि कलियुग ने उसकी तीन टांगें तोड़ दी हैं। चौथा चरण सत्य नष्ट नहीं होता है। सत्य नष्ट हो जाएगा तो संसार नष्ट हो जाएगा। कलियुग में सत्य का अस्तित्व थोड़े अंशों में रहता है। वर्तमान काल में भी संसार में कुछ सत्यधारी लोग हैं, इसीलिए संसार टिका हुआ है। घोर कलियुग में धर्म के चारो चरण नहीं रह पाते। कलियुग में धर्म के तीन चरण तो नष्ट ही हो जाते हैं। परीक्षित ने देखा कि एक शूद्र राजा जो कलियुग था, वह गोवंश पर अत्याचार कर रहा था। कलियुग में शूद्रों का ही राज्य रहेगा, ये पहले ही पुराणों में लिख दिया गया है। शूद्र से तात्पर्य शूद्र जाति से नहीं है अपितु शूद्र प्रकृति के लोगों से है। अधर्म प्रधान प्रकृति के अनुसार चलने वाले लोगों का ही राज्य कलियुग में रहता है।

इह सन्तो विषीदन्ति प्रहृष्यन्ति ह्यसाधवः ।
धत्ते धैर्यं तु यो धीमान् स धीरः पण्डितोऽथवा।।

(श्रीमद्भागवत माहात्म्य १/५८)

कलियुग में बेईमान या अधार्मिक लोग प्रसन्न रहते हैं, धन कमाते हैं और ईमानदार या संत प्रकृति के लोग कष्ट पाते है। भक्त दुःखी रहते हैं और दुष्ट लोग संसारी सुख भोगते हैं। इसी को कलियुग कहा गया है। इसलिए कलियुग में धैर्य रखने वाला ही धर्म का पालन कर सकता है, अन्यथा यदि धैर्य खो देगा तो उसकी सारी भक्ति और निष्ठा समाप्त हो जाएगी।

पूज्य महाराज जी कहते हैं कि एक बार दिल्ली से कुछ लोग मेरे पास आये और बोले कि वहाँ हम गाय नहीं रख सकते क्योंकि वहाँ ये कानून बना दिया गया है कि गाय के गोबर से गंदगी फैलती है अतः गोपालन पर प्रतिबन्ध है। गाय रखने पर जबरन लोग उसे पकड़ के ले जाते हैं और कहते हैं कि तुम शहर गन्दा करते हो। महाराज जी ने उनसे कहा कि कलियुग में अच्छे लोग कष्ट ही पायेंगें, अभी तुम मुर्गीपालन करो, सुअरपालन करो, मत्स्य पालन करो तो सरकार तुम्हारी सहायता करेगी, जबकि इनमें हिंसा होती है लेकिन गाय नहीं रख सकते हो। ये क्या है, ये कलियुग है। जिस समय अंग्रेज लोग आये थे तो उन्होंने यहाँ की उन्नति को देखकर भारत को सोने की चिड़िया कहा। उस समय भारतवर्ष दुनिया में सबसे सुखी और समृद्ध था। अंग्रेजों ने सोचा कि हमलोग यहाँ व्यापार करेंगे। व्यापार करते–करते लोगों में फूट पैदा करके वे यहाँ के राजा बन बैठे और यहाँ का सारा धन अपने देश में ले गए तथा भारत को गरीब बना दिया। गरीब कैसे बनाया, उन्होंने देखा भारत वर्ष में बहुत अधिक अन्न का उत्पादन होता है। यहाँ पर मनुष्यों से अधिक संख्या गायों की है। उस समय के अंग्रेज गवर्नर जनरलों ने ऐसी योजना बनाई कि अगर भारतवर्ष में गौ हत्या शुरू हो जाय तो ये देश गरीब बन जाएगा, उन्होंने सोचा कि जो हमारी रासायनिक खाद यूरिया है उसको यहाँ यदि बेचा जाए तो गाय के गोबर की खाद और उससे समृद्ध बनी भारतीय कृषि का विनाश हो जाएगा और हमारे लिए भारत में बाजार कायम हो जाएगा। इसी उद्देश्य से भारत में सबसे पहला गौ हत्या केंद्र अंग्रेजों के द्वारा ही खोला गया और उसके बाद से हजारों गौ हत्या केंद्र खुले। एक दिन में लगभग तीस हजार गायें कटती हैं। इस तरह से लाखों–करोड़ों की संख्या में गायें काटी गयी हैं और काटी जा रहीं हैं और ऐसा लगता है कि कुछ दिनों बाद गाय के दर्शन ही नहीं होंगे। वर्तमान समय में भी लोग गोपालन नहीं करते। शहरों में तो क्या गाँवों में भी गाय के दूध से अधिक धनोपार्जन न हो पाने के कारण लोग भैंस और जर्सी गाय रख लेते हैं। जर्सी गाय देशी नहीं है, विदेशी नस्ल की है, वस्तुतः वह गाय ही नहीं है। देशी गाय जो भगवान् का स्वरुप होती है, कुछ समय बाद उसका दर्शन इस पृथ्वी पर दुर्लभ हो जाएगा। अब भी जो लोग गौदान के लिए गाँवों में गाय खरीदने आते हैं तो उन्हें अच्छी गायें नहीं मिल पाती हैं। इसलिए वर्तमान समय में भी भारत में गायों का मिलना मुश्किल हो गया है जबकि यह गौ प्रधान देश है। अंग्रेजों ने सोचा था कि हिन्दुस्तान को गरीब करने के लिए गौ वंश का नाश जरूरी है। इसमें वे सफल रहे। भारत के विनाश का दूसरा उपाय उन्होंने सोचा कि यहाँ जो गुरुकुल हैं इनसे हिन्दू संस्कृति पुष्ट होती है अतः इसको नष्ट करने के लिए उन्होंने अनेक प्रकार के मत चलायें जिससे हिन्दुओं की अपने धर्म से

आस्था हट जाए और उसमे भी अंग्रेज लोग सफल रहे। उन्होंने जो गो हत्या केंद्र खोले थे वे वृद्धि को प्राप्त होकर हजारों की संख्या में पहुँच गए। ऐसी परिस्थिति बनी रही तो कुछ दिन बाद कहीं भी गायों का दर्शन तक नहीं हो पायेगा। अब भी केवल गोशालाओं में ही गायों के दर्शन होते हैं। वहां भी समुचित रूप से गायों की सेवा नहीं होती है। गोपालन करने में लोगों को आर्थिक लाभ नहीं होता इसलिए वे गाय न पाल कर अन्य पशुओं का पालन करते हैं जिनके लिए सरकार द्वारा वित्तीय मदद दी जाती है। ये सब ऐसी विकृतियाँ हैं जो मनुष्य को गौभक्ति से दूर हटाती है। सारा संसार जानता है कि गाय का बछड़ा जन्म लेने के थोड़ी देर बाद ही उछलने–कूदने लगता है, जबकि भैंस के बच्चे की सुस्ती कई महीने बाद दूर होती है। इसका कारण यह है कि भैंस के दूध में तमोगुण होता है जबकि गाय का दूध सतोगुण प्रधान होता है, बुद्धिवर्धक होता है, अनेक प्रकार की बीमारियों से बचाता है लेकिन गौ दुग्ध की इन विशेषताओं का सरकार जनता में प्रचार नहीं करती है अपितु उन्हें गौपालन से रोकती है जैसे कि दिल्ली के कुछ भक्तों ने बताया कि घर में गाय रखने पर सरकारी कर्मचारी उसे पकड़ के ले जाते हैं और लोगों से कहते हैं कि तुम शहर में गाय नहीं रख सकते हो क्योंकि इससे गंदगी फैलेगी, शहर गन्दा हो जाएगा जबकि मुर्गी रखने पर सरकार प्रतिबन्ध नहीं लगाती है, मछली उद्योग को सरकार द्वारा प्रोत्साहन दिया जाता है। जिस कार्य में हिंसा है, अधर्म है उसको सरकार प्रोत्साहित करती है क्योंकि यह कलियुग है। ब्राह्मण लोग अंडा, मांस और मदिरा का सेवन करने लगे हैं, यह अधर्म है और बड़ी तीव्र गति से बढ़ रहा है। इसीलिए लोगों में गौ भक्ति नहीं रही, गाय में आस्था नहीं रही। जबकि गाय के लिए भगवान् स्वयं अवतार लेते हैं, गाय की सेवा करते हैं, गौचारण के लिए नंगे पाँव वन में जाते हैं। जैसे श्री कृष्ण माता यशोदा से कहते हैं–

मैया हौं गाय चरावन जैहों तू कह महर नन्द बाबा सो बड़ो भयो न डरैहों।

श्यामसुन्दर जानते हैं कि यशोदा मैया मेरे लिए गौचारण हेतु हठ करेगी तो नन्दबाबा को उसकी बात माननी पड़ेगी।

तेरे हेतु तात मनसुख अरु, हलर संग रहैहो। मैया हौ गाय चरावन जैहों।।

मैया कन्हैया को गोचारण के लिए मना करती है और कहती है– लाला ! वन में प्रतिदिन कंस के भेजे हुए असुर आ रहे हैं, वहां तेरे लिए खतरा है क्योंकि कंस तुझे मारना चाहता है कन्हैया बोले– मैया! मैं अकेला नहीं रहूँगा, मनसुखा और दाऊ भईया को साथ रखूंगा। बड़े–बड़े जंगल और कालीदह आदि खतरे के स्थल हैं, ऐसे स्थानों पर मैं नहीं जाऊँगा।

बंसीवट तर गायन के संग, खेलत अति सुख पइहों।

कालीदह में तो कालिया नाग रहता है, वहाँ नहीं जाऊँगा, वंशीवट बहुत सघन वन नहीं है, वहां मैं गायों के साथ खेलूंगा। मैया मेरे लिए छाक बाँध दे क्योंकि गाय चराते समय दौड़ना पड़ता है इसलिए कांवर (बड़ा थैला) में गाय के दूध का गाढ़ा दही और चावल रख दे, गाय चराते समय भूख लगेगी तो कई बार भोजन करूँगा।

ओदन भोजन दै दधि कांवर, भूख लगे तो खैहों। मैया हौ गाय चरावन जैहों।।

और मैया मुझको सौगंध दिला दे कि मैं जमुना जी में नहीं नहाऊंगा।

सूरदास मैं साथ सौंह दै, जो जमुना जल नइहों। मैया हौ गाय चरावन जैहों।।

मैया ने कहा – अच्छा, यमुना में तो नहीं नहायेगा? श्री कृष्ण बोले– हाँ मैया, सौगंध दे कर कहता हूँ कि यमुना में नहीं नहाऊंगा, लेकिन गाय चराने अवश्य जाऊँगा।

कृष्णलीलाकाल में गौ–पालन के कारण सारे ब्रज में ब्रजवासी स्वस्थ थे।

गोविन्दलीलामृत में श्रीकृष्ण कहते हैं कि गौ–सेवा के प्रताप से चारों ओर सुख–समृद्धि, धन–संपत्ति और धर्म की वृद्धि होती है। गौ–पालन करने के कारण कभी भी आपत्ति नहीं आ सकती। कंस के भेजे हुए सभी दैत्यों की मृत्यु हो गयी, अंत में कंस भी मारा गया। यहाँ तक कि बड़े–बड़े देवता इन्द्र, वरुण और ब्रह्मा तक पराजित हो गए। गोपाल की ग्वाल लीला को देखकर ब्रह्मा जी को मोह हो गया और उन्होंने बछड़े चुराए किन्तु अन्त में श्री कृष्ण के शरणापन्न होकर उनके चरणों में गिर पड़े और क्षमा माँगी। जो अपराध करता है वो अवश्य गिरता है और जो गौसेवा करता है, उसको अवश्य सुख की प्राप्ति होती है। जैसे–जैसे मान मंदिर में गौसेवा बढ़ रही है वैसे–वैसे यहाँ पर भक्ति भी बढ़ रही है। जब गौसेवा बढ़ती है तो भक्ति बढ़ती है, गौसेवा के प्रताप से मान मंदिर में और यहाँ की माता जी गौशाला में

चौबीस घंटे नाम संकीर्तन चल रहा है। चारों ओर भगवन्नाम कीर्तन की धूम मच गयी है, यह गौसेवा की महिमा है। जब गौ भक्ति में वृद्धि होती है तो कृष्ण भक्ति में स्वयमेव ही वृद्धि होती है। गाय और कृष्ण अलग–अलग नहीं हैं। गोपाल वह है जो गायों का पालन करता है। गोविन्द वह है जो गायों की रक्षा करता है। जब से हमारे देश में गौभक्ति घटी तब से कलियुग बढ़ा, अधर्म और पाप की वृद्धि हुयी। सच्चे मन से गौमाता की भक्ति करो तो कृष्ण भक्ति स्वयं ही तुम्हारे पास आएगी, बिना बुलाये आएगी, बिना प्रयत्न के आ जायेगी। नहीं तो व्यास जी ने लिखा है –

कहत सुनत बहुतै दिन बीते भक्ति न मन में आई।
श्याम कृपा बिन साधु संग बिन कहो कौने रति पाई।।

भाषण देते–देते उम्र बीत गयी लेकिन हृदय में भक्ति नहीं आई। यदि गौ–सेवा बढ़ जाए तो अपने आप घर–घर भक्ति बढ़ जायेगी। गाय और गोपाल एक ही हैं, पृथक नहीं हैं।

हम लोग काफी आगे तक पहुंचे हैं। भले ही यमुना जी का कार्य अभी पूर्ण न हुआ हो किन्तु जाग्रति के विषय में हम बहुत आगे तक गए हैं। हमारे मन में यह चिंतन होना चाहिए कि हमारा ब्रज के प्रति, गायों के प्रति, श्री यमुना जी के प्रति कर्त्तव्य क्या है ? वह कर्तव्य का भाव जब सम्पूर्ण रूप से हमारे हृदय में जागेगा तब हम इस काम को काफी आगे तक बढ़ा पायेंगे, ऐसा मेरा मानना है। १८ मार्च २०१८ से पुनः यमुना आन्दोलन का शुभारम्भ होगा, यह आन्दोलन अनिश्चितकालीन होगा, जब तक हमारी माँगें पूरी नहीं होंगी, जब तक यमुना की धारा अविरल व प्रदूषण रहित प्राप्त नहीं होगी तब तक यह आन्दोलन चलता रहेगा। श्री बाबा महाराज के आशीर्वाद से यमुना मुक्तिकरण आन्दोलन ने ऐसा संकल्प लिया है कि अबकी बार का आन्दोलन हम ब्रज में ही करने जा रहे हैं, इससे हमें श्री बाबा महाराज की प्रेरणा और आशीर्वाद भी प्राप्त होता रहेगा।

गौ–सेवी संतों के उद्‌गार

(गौभागवत–कथा में हुए संत–समागम से संगृहीत)

पूज्य श्रीपंकज बाबा

(वल्लभसम्प्रदायाचार्य, गोकुल)

पूज्य श्री रमेश बाबा महाराज की जो अलौकिक ब्रज सेवा है, उसका वर्णन तो लौकिक जिह्वा से किया ही नहीं जा सकता है। संत साक्षात् भगवान् के ही रूप होते हैं। श्रीबाबामहाराज की गाय की सेवा हो या ब्रज की सेवा हो अथवा राधाकृष्ण की भक्ति हो, सबमें आप उत्कृष्टता को प्राप्त हुए संत हैं, ऐसा हमारा हृदय से मानना है। माताजी गौशाला में जो गाय की सेवा हो रही है, वह अत्यंत ही अद्‌भुत है, मैं स्वयं भी इस गौशाला में गाय की सेवा देखता हूँ तो हृदय बड़ा प्रफुल्लित हो जाता है। पैंतालीस हजार की संख्या में गाय होने के बावजूद भी सभी को यहाँ पूर्ण पोषण मिलता है, उनके प्रति माँ के समान भाव रखा जाता है और उनकी सेवा होती है।

कई बार श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से भारतवर्ष के समस्त श्रृद्धालु लोगों ने यमुना जी के लिए प्रयास किया है और वह प्रयास काफी आगे तक गया है। वर्तमान सरकार के समय में भी जो यमुना मुक्तिकरण आन्दोलन हुआ, उसमें भी

संत श्रीचित्प्रकाशानंदजी (वृन्दावन)

मेरा तो यह निवेदन है कि जितने भी गौभक्त हैं, शुभचिन्तक हैं, समाजसुधारक हैं, वे किसानों के अन्दर गाय की उपयोगिता का भाव जाग्रत करें, उनको बतायें कि गाय अन्तिम समय तक परोपकार करती है। अगर हमारा किसान जो गौपालक है, वह गाय की महिमा को समझ जाएगा तो फिर अन्य किसी के आश्रय लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। वर्तमान समय में गौभक्तों को इस बात पर बहुत जोर देना चाहिए कि जहाँ गाय पाली जा रही है, उसी खूंटे पर गाय मरे तो गौवध का बंद होना अवश्य सम्भव हो जाएगा।

संत श्रीहरिबोल बाबा (वृन्दावन)

पूज्य श्रीबाबामहाराज का जीवन अत्यधिक संघर्षमय रहा है लेकिन संघर्ष से उनकी विजय हुयी है। श्रीबाबामहाराज के दो संकल्प हैं– एक तो यमुना जी को हर हालत में ब्रज में लाना है। श्रीबाबा ने इसके लिए बहुत बड़ा संकल्प लिया और हमारा आपका दायित्व है कि हमलोग मनसुखा की तरह लठिया तो लगा ही सकते हैं, गिरिराज जी को उठाने वाला तो कोई और है। श्री बाबा महाराज का दूसरा संकल्प है– गौमाता की रक्षा। गाय तो एक ऐसी धरोहर है जिसके शरीर

में तैंतीस कोटि देवताओं का निवास है। जो गाय की उपेक्षा करता है, वह कभी सुखी नहीं रह सकता है।

संजीवकृष्ण ठाकुरजी (व्यासाचार्य, वृन्दावन)

मेरी गौशाला में पांच सौ गाये हैं और पांच सौ गायों की सेवा करने में भी पसीना निकल आता हैं फिर माताजी गौशाला में पैंतालीस हजार गायों की सेवा करना कोई आसान काम नहीं है। श्रीजी ही करा रही हैं। मुझे लगता है कि पूरे भारतवर्ष में ऐसा गोष्ठ देखने को कहीं नहीं मिलेगा। गाय का धार्मिक, अध्यात्मिक रूप से बचना बहुत जरूरी है। याद रखना, गाय संकट में आई, गाय दुःखी हुई तो ज्यादा दिन तक मनुष्य भी इस धरती पर सुरक्षित नहीं रह पायेगा। गाय का बचना गाय के लिए जितना ज्यादा जरूरी है, उससे भी ज्यादा मनुष्यता के संपोषण, संवर्धन के लिए गाय का बचना बहुत जरूरी है। गाय है तभी प्रभु की सेवा है। गोपाल जी तो कहते हैं– मेरे आगे–पीछे, इधर–उधर गाये हों, मैं गायों के बीच में ही रहूँ। श्रीठाकुरजी की सच्ची सेवा करना चाहते हो तो अपने घर पर गौमाता को पालो। आज हमारे घर छोटे हो गए, फ्लैटों का हमारा जीवन हो गया है। गाय हमारे घर से निकल गयी, इससे भी ज्यादा चिंता और दुःख का विषय है कि गाय हमारे दिल से भी निकल गई है। जिस सर्वतीर्थमयी, सर्वदेवमयी गाय की चरणरज का तिलक करने से, जिस गाय की परिक्रमा करने से सातों द्वीपों की परिक्रमा करने का फल मिल जाता हो, वह गौमाता आज दर–दर की ठोकरें खाती फिर रही है। पृथ्वी को धारण करने वाले सप्त आधारों में प्रथम आधार है गौ माता, उसे दूध पीने के बाद निकाल दिया, इतना कृतघ्न तो कुत्ता भी नहीं होता है, जितने कृतघ्न हम हो गए हैं। गाय कूड़ा–कचरा खाती फिर रही है। धन से यदि कोई गौशाला में सेवा न कर पाए तो कोई बात नहीं, सद्भावनाओं से दरिद्र हो जाना दुनिया की बहुत बड़ी घटना है। हम लोग सद् विचार से भी दरिद्र हो गए हैं। सभी लोग गौभक्ति, गौ–सेवा की प्रेरणा लें। यमुना जी के लिए तो पूज्य बाबा महाराज ने ब्रज से लेकर दिल्ली तक विशाल अभियान चलाया ही था। आगे भी १८ मार्च २०१८ को फिर से यमुना आन्दोलन होगा।

चित्रलेखाजी (व्यासाचार्या, खाम्बी, ब्रज–वृन्दावन)

कई बार गौ माता की सेवा के सम्बन्ध में बहुत–से बड़े–बड़े प्रवचन दिये जाते हैं किन्तु अगर उस प्रवचन को सार्थक और सेवा के रूप में देखना हो तो प्रत्येक श्रद्धावान गौ–सेवक को बरसाना, गहवरवन में श्रीमाताजी गौशाला में आकर दर्शन अवश्य करना चाहिये तो समझ में आयेगा कि गाय केवल बोलने का नहीं अपितु सेवा करने का विषय है। मान मन्दिर सेवा संस्थान ने श्रीराधारानी की कृपा से सदा ही सेवा को प्रथम स्थान दिया है और आज केवल भारत ही नहीं, विश्व में कहीं भी अगर गौमाता का नाम आयेगा तो माताजी गौशाला, कैसी गौशाला है जिसे प्रथम स्थान दिया जायेगा केवल यहाँ की सेवा और श्रीबाबा महाराज के आशीर्वाद और सभी वैष्णवों की भक्ति के प्रताप से।

मेरा बचपन भी मानमन्दिर में, रसमन्दिर में बीता है, यहाँ की कई ब्रजयात्राओं में भी मुझे आने का अवसर प्राप्त हुआ है। कहीं न कहीं यह श्रीजी का और श्रीबाबा महाराज का आशीर्वाद है कि आयु, गुण और ज्ञान न होने के बावजूद भी श्री ठाकुर जी ने मुझे भागवत कथा का प्रचार–प्रसार करने और गौसेवा करने का अवसर प्रदान किया है।

श्रीराधारमणजी महाराज

(हरिनाम प्रचारक – विरक्त संत, मध्यप्रदेश)

गौसेवा–गौरक्षा के विषय में सभी सन्त प्रायः लगे हुए, हैं और यह अभियान बहुत तेजी से चल रहा है। गौसेवा की भावना कैसे आयेगी, गोपाल की कृपा से आयेगी। गोपाल गौ के पालक हैं, गौ जिनकी पूज्या हैं, ऐसे गोपाल जी की शरण ग्रहण करने से हममें गौसेवा की भावना आयेगी और गोपाल की शरण हम कैसे ग्रहण करेंगे, जब हम घर–घर में हरिनाम की अलख जगायेंगे और प्रभातफेरी के समय ठाकुर जी से हम रोज प्रार्थना करेंगे– हे प्रभो! आप, ऐसी शक्ति दीजिये, जिससे गौरक्षा हो। ये कृपा गोपाल जी ही कर सकते हैं और उनसे हमें दृढ़ निश्चय प्राप्त हागा, गौसेवा की भावना आयेगी। हम सभी को प्रभातफेरी के माध्यम से ठाकुर जी के यहाँ गुहार लगानी है, जिससे गौरक्षा हो सके।

संत श्रीभक्तशरणजी महाराज

(व्यासाचार्य – श्रीमानमन्दिर, गह्वरवन, बरसाना)

जितने भी अंश में आज देश में गौहत्या हो रही है, उसका मूल कारण है हमारी गौरक्षा के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति का अभाव। विचार करके देखें तो शक्ति–सामर्थ्य–सम्पन्नता की दृष्टि से हमारा अध्यात्म वर्ग अत्यधिक संपन्न है। श्रीजी की कृपा से यदि दृढ़ इच्छा शक्ति जाग्रत हो तो गौहत्या पर रोक लगाना कोई असंभव बात नहीं है। मूल बिंदु यह है कि हमारा प्रत्येक उत्सव गौरक्षा के विषय में हो, इसी प्रकार प्रयाग का माघ मेला और कुम्भ मेला भी यदि गौरक्षा से संबंधित हो और सभी एक मत से, एक विचार से, एक मंच पर आकर गौरक्षा के विषय में चिंतन करें, प्रयास करें तो गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगना कोई असंभव कार्य नहीं है।

प्रथम बिंदु यह है कि गौरक्षा के विषय में जो भी चिंतन करता है, उसे उपासक होना चाहिए, दैनिक क्रम में आराधना होनी चाहिए, जिसमें ठाकुरजी–श्रीजी से प्रार्थना करनी चाहिए। दूसरा बिंदु ये है कि गौमाता से सम्बन्ध होना चाहिए, केवल बात बनाने से गौरक्षा नहीं होती है, गौ माता से अपने स्तर से हर व्यक्ति का सम्बन्ध होना चाहिए। जो किसान है, गाय रख सकता है, वह गाय रखे, जो गाय नहीं रख सकता लेकिन आर्थिक स्तर से संपन्न है वह आर्थिक रूप से सहायता करे, वैचारिक स्तर पर जो संपन्न है, वह वैचारिक रूप से सहायता करे, शारीरिक रूप से संपन्न व्यक्ति शारीरिक रूप से सहायता करे।

पंडित रामजीलाल

(व्यासाचार्य – श्रीमानमन्दिर, गह्वरवन, बरसाना)

जिसने जो कुछ भी लौकिक–पारलौकिक उपलब्धि प्राप्त की, वह गौसेवा के बल से ही प्राप्त की। हमलोग गाय को पशु समझते हैं। अरे ! गाय कृष्ण की भी पूज्या, आराध्या है, इसलिए हम सभी गाय के प्रति आराध्य बुद्धि रखें, उनकी पूजा करें। पूजा तो दूर रही, हम अपने पारिवारिक सदस्य से बढ़कर गाय को मानें, इससे हमारा कल्याण है। रामकृष्णपरमहंसजी ने एक बहुत सुन्दर बात कही कि 'गाय' शब्द दो अक्षरों से बना है . 'ग' और 'य'। 'ग' से सम्बन्ध है गंगाजी का और 'य' से यमुनाजी का, गंगा और यमुना जी की जो दुर्दशा है वह यदि सुधर जाए तो समझो कि हमारे सब कार्य बन जायेंगे। यदि गंगा–यमुना की दुर्दशा बनी रहेगी तो समझ लो कि हम लोग गौहत्या के जिम्मेदार हैं। गंगा और यमुना नदी नहीं हैं, ये उपास्य हैं, देवी हैं, ब्रज की शोभा श्रीयमुनाजी से है। आज ब्रज में यमुना जी नहीं हैं। यमुनोत्री के सारे जल को हरियाणा सरकार ने हथिनी कुण्ड में रोक रखा है और यमुना जी के रूप में ब्रज में जो जल आ रहा है, यह दिल्ली के करोड़ों लोगों का मल–मूत्र है जिसका हम लोग आचमन करते हैं और अपने आराध्य श्रीठाकुरजी को नहलाते हैं, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। प्रयाग माघ मेला में लाखों लोग उपस्थित होते हैं, साधु–संतो का वहाँ शाही स्नान होता है। मै उन साधु–संतो से निवेदन करना चाहूँगा कि वे यदि यह निश्चय कर लें तो यमुना जी का ब्रज में आना कोई बड़ी बात नहीं है। जब यमुनाजी हथिनीकुंड के आगे हैं ही नहीं तो प्रयाग में संगम किस बात का। गंगा–यमुना के मिलन से संगम होता है। साधु–संतो को सरकार से कहना चाहिए कि हम शाही स्नान तभी करेंगे जब यमुनाजी का जल यहाँ आएगा, नहीं तो हम स्नान नहीं करेंगे। यदि संत लोग दृढ़ता के साथ इस बात को सरकार से कह दें तो सरकार की हिम्मत नहीं है कि वह उनकी माँग की उपेक्षा करें।

Save Cow! Save Bharat!

संत श्रीराधाप्रियजी (व्यासाचार्य– मानमंदिर, बरसाना)

Yet another Mass Movement to be Called up ..... Save Cow! Save Bharat!

At the outset of another new movement to be led by MaanMandir, recently a 'GauBhagwat Mahotsav' was celebrated and the occasion was a decade instituting celebration of ShriMataji Gaushala which was established about 10 years ago on 7 July 2007 in Shridham Barsana with merely 4 cows and now nurturing around 50,000 of the holy cattle breed. With an idea to send a message around the world that ''गौ संस्कृति'' (Cow Culture) is inevitably the root cause of all prosperous events that have happened in Bharat so far, a fairly less pompous but very dignified celebration was or-

ganized last week of this December in Shri Dham Barsana under divine blissful shelter of His Holiness Shri Ramesh Baba ji Maharaj and propitious presence of devotees who came to join the sacred event from various parts of the world. Before I throw light on the forthcoming campaign, let me quickly share some highlights of the 'Gau Bhagwat Mahotsav' recently held. Following our ancient tradition which proclaims ''गावो विश्वस्थ मातरः,the celebration started with 'GauPujan' followed by a seven days 'Gau Bhagwat Katha' recited by scholastically elevated Speaker of Shrimad Bhagwatam 'Sadhvi Murlikaji'. We had lot many Spiritual and social dignities including Cabinet Ministers from U.P. Government who visited and paid their obeisance to mother Cow. A Special programme of 'Raaslila' performed by famous ballad artists, just after regular evening Satsang delivered by Pujya Baba Maharaj, caught the attention of all fervent enthusiasts who enjoyed every moment of the weeklong celebration and have enriched themselves Spiritually. A 'Gau Sant Sammellan' was also organized as the concluding event of the ceremony where leading saints and speakers participated and shared their divine words of wisdom among the present devotees. Every day special feast for all thousands of devotees had also been a talk of the event.

So, this is what has happened recently at MaanMandir, the most happening place in sacred Braj area. Now, let us discuss here the main schema behind the mystical festival. We all know how much reverend is cow to entire Hindu fraternity. Ancient 'Bharatiyan' texts are flooded with ballads, hymns and verses glorifying Cow as one of the most sacred creation by the divinity.

The legendary Son of Ganga ' ShriBhishma' himself elaborately illustrates in 'Mahabharat' that all prosperity, fortune & even the past and future is governed by service of the Holy cow.

गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथा मूलं गोषु दत्तं न नश्यति।।

गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।
गावो भविष्यं भूतं च गोषु यज्ञा प्रतिष्ठिताः।।

(अनुशासनपर्व, महाभारत)

Our Ancient spiritual masters were very well aware that the holy cow is universal source of all bliss. All divine energies reside in cow.

सर्वदेवमयी गावोः; सर्वतीर्थमयी गावोः

It is the treasure of all kind of fortune. May it be health or wealth, Cow has remained the foremost giver of all prosperity. Customarily, Cow urine therapy is capable of curing many incurable diseases as well. Ancient Holy texts, like Atharva Veda, Charaka Samhita, RajniGhuntu, brihadbhagabhatt, Amritasagar, Bhavaprakash, Sushruta Samhita, etc., contain beautiful description about the medicinal benefits of cow urine. It has been authentically researched by leading agencies that Cow Urine is capable of curing diabetes, blood pressure, asthma, psoriasis, eczema, heart attack, blockage in arteries, fits,

cancer, AIDS, piles, prostrate, arthritis, migraine, thyroid, ulcer, acidity, constipation, gynecological problems, ear and nose problems and several other diseases.

The analysis of cow urine has shown that it contains nitrogen, sulphur, phosphate, sodium, manganese, carbolic acid, iron, silicon, chlorine, magnesium, citric, titric, succinic, calcium salts, Vitamin A, B, C, D, E, minerals, lactose, enzymes, creatinine, hormones and gold. Usually, anyone falls ill when there is a deficiency or excess of these substances inside the body. Cow urine contains all of these substances, which are naturally present in the human body. Therefore consumption of cow urine maintains the balance of these substances and this helps cure incurable diseases.

At the same time drinking cow milk and consuming Ghee give strength and increase good cholesterol (HDL). It also nourishes human body with 'Saatvic' component which enriches overall vigor of an individual with purity.

Similarly, the biggest energy contribution from the holy Cow is its dung. Bharat's cattle produce more than 850 million tons of manure every year. Our ancient texts explain that dung from cows is different from all other forms of excrement. Not only it is free from bacteria, but it also does a good job of killing them. It is the best agent to restore the fertility of land. Now, the entire world is gradually moving towards the organic way of doing agricultural practices, where cow dung is most effective catalytic ingredient.

Having said above, very briefly, about significance of Cow, now let us understand the hypocritical inferences of 'Indian' dogma towards the holy cow. At this unusual note let us share some eye-opening facts;

Despite of Cow slaughtering been banned in many states of Bharat,(complete ban in about 18 states and partially in 4 states) still the country is the world's biggest exporter of beef along with Brazil and is projected to hold on to that position over the next decade, according to a report by the Food & Agriculture Organization (FAO) and the Organization for Economic Cooperation (OECD). 'India' stood as largest country among beef exporting countries across the world. It is followed by Brazil and Australia. During the year 2016, 'India' did the beef export business of USD 3680 million while the global beef exports recorded USD 19886 million. About 1.9 million tons of beef was exported from 'India' in 2016.

Voice against cow slaughtering has been raised ever since the British era. Just after Independence, the President of Bharat, in 1947 received more than 1,00,000 letters, postcards etc. requesting immediate ban on cow slaughtering. Conflicts over cow slaughter often sparked big agitations that led to the killing of more than 100 people in 1893 alone. In 1966, at least eight people died in a mass demonstration outside the parliament in Delhi while demanding a national ban on cow slaughter. And in 1979 Acharya Vinoba Bhave, went on a hunger

strike to ban cow slaughter. But the fact remains that our contribution in beef export is highest in the world.

Interestingly, most of the profitable making slaughter houses are owned by Hindus only. Here is a small list of owners who runs largest slaughter houses in 'Bharat'.

Al Kabeer Exports Pvt. Ltd.: Owner is Satish Saberwal.

(This slaughter house is run by Al Kabeer Exporters Pvt. Ltd. With its offices in many countries, last year Al Kabeer did business worth nearly Rs 650 crore.)

Arabian Exports Pvt. Ltd.: Owner is Sunil Kapoor

MKR Frozen Food Exports Pvt Ltd: Owner of this Delhi-based company is Madan Abbott.

Al Noor Exports Pvt Ltd: The Company is owned by Sunil Sood.

AOB Exports Pvt. Ltd.: It is owned by O.P. Arora.

Save Cow! Save Bharat!deprived off or diseased cow quite often and eventually which are being taken to slaughter houses.

Although the present Central Government led by Prime Minister Mr. Narendra Modi has recently passed a notification about banning of sale of cattle for slaughtering nationwide, but the question comes if it really going to affect the killing of the holy breed of cattle? When at one end we are leading the list by being the largest exporter of beef, how could we justify a nationwide ban on cow slaughtering? Doesn't it sound irrational?

So, now about the agenda, as discussed earlier, with which MaanMandir is going to assist in changing the current oblivious statistics of brutally assaulted 'Bharatiyan' cow breed. MaanMandir,under divine leadership of His Holiness Pujya Ramesh Baba Ji Maharaj, is all set to put an example which will reveal the fact that the cow based economy is the only method for resolving all current financial, political, social, cultural and environmental issue of the country.

Having a current showcase of around 50,000 cows at one location in Barsana, the plan is to initiate an unprecedented movement to lift-up a worldwide strong voice for complete ban of Cow beef export in 'Bharat' and then subsequently establishing such 'Gaushala' all around the country with an assured plan of not only self-sustenance but with a vision to contribute in escalation of various crucial parameters for Economic and Environmental growth thereby making the holy cow an integral part of Economy and Ecological development of the country.

Our Saints and Rishis have truly envisaged the importance of cow and hence always advocated a cow based economy for comprehensive growth. Now, again it is high time we got unified together to work under divine guidance of revered figure like His Holiness Ramesh Baba Ji Maharaj to bring back the lost glory of the Bharat which had been famous for having oceans of Milk once upon a time.

राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी ! आप मेरे ऊपर दया करिये। इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है, अत: आप अपने सहज करुण स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये।

राधे किशोरी दया करो ।
हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो।
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो।
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो।

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आई हैं। मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ। इस जगत में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है। हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे ! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये। मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ। आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए। हे श्यामा जू ! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है।